भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 14 | **अप्रैल-मई** 2013 | **अंक** 4-5

पादुका-पुराण

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

रामायण में पादुकाओं की महिमा अति अनुपम है। मेरे जीवन में भी एक बार ऐसी घटना घटी कि पादुकाओं की महिमा बड़े विचित्र रूप से मेरे सम्मुख आयी।

सन् 1921 में मैं और मेरे कुछ सहयोगी तिरुच्चेंगोडु के 'गाँधी-आश्रम' में काम कर रहे थे। इस प्रदेश में वर्षाभाव के कारण बार-बार दुष्काल पड़ा करता है। दुष्काल-पीड़ितों को आश्रम आधे मूल्य में अनाज देता था।

दुष्काल से पीड़ित प्रदेशों में मणियनूर गाँव की हालत सबसे शोचनीय थी। उस गाँव में सबके-सब मोची ही थे। सप्ताह में एक दिन मणियनूर में हाट लगती थी। आस-पास के गाँवों से लोग क्रय-विक्रय करने आते थे। ऐसी-ऐसी जगहों को देखकर ही उस जमाने की सरकार ताड़ीखाने खोला करती थी।

'गाँधी-आश्रम' के द्वारा जिन गाँवों की सेवा होती थी, उनके निवासियों ने कसम खायी थी कि वे कभी ताड़ी-शराब नहीं पियेंगे। मणियनूर की मोची बिरादरी ने भी यह कसम खायी थी।

गुरुवार के दिन आश्रम में अनाज दिया जाता था। एक गुरुवार को मणियनूर का मुनियन तथा और कुछ लोग मेरे सामने आकर खड़े हो गये।

''क्या बात है ?'' मैंने पूछा।

''...शपथ तोड़कर दो आदमियों ने कल रात खूब पी ली थी।''

''उन्हें यहाँ लाये हो ?'

''जी। एक खुद आया है और दूसरे की घरवाली आयी है।''

''उन लोगों ने कसूर कबूल कर लिया ?''

''जी नहीं! यह कल रात पीकर आया था और अपनी घरवाली से झगड़ रहा था। मालिक, सारा गाँव जानता है। कबूल कैसे न करेगा ?''

मैंने अपराधी की ओर देखा और पूछा—''तुम्हें कुछ कहना है ?''

''मालिक, मैं घरवाली के साथ झगड़ रहा था, यह सच है। पर इतने से किसी को पिया हुआ समझना कहाँ का न्याय है ?...जो नहीं पीते, वे झगड़ते नहीं क्या ?''

''देखो, सच-सच बताओ। कल तुम ताड़ीखाने गये थे कि नहीं ? अगर तुम्हारे गाँव में से एक ने भी पी है, तो सारे गाँव का अनाज बन्द कर दिया जायेगा।''

शेष पृष्ठ 19 पर

दस्तक देती चुनौतियाँ

हमारे आकाश पर दूर-दूर तक फैला हुआ है इलेक्ट्रॉनिक तारों का संजाल, दिशा-दिशा में स्पन्दन भर रही हैं विद्युत्-तरंगें। अन्तरिक्ष में स्थापित उपग्रह के माध्यम से हम सन्देशों-सूचनाओं का आदान-प्रदान कर लेते हैं, श्रव्य-दृश्य तरंगों के प्रयोग से पारिस्थितिक साक्ष्य जुटाते हैं, आवश्यक गणनाएँ, डाटा आदि एकत्र करते हैं, शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं, ट्वीट करते हुए सन्देश/टिप्पणी देते हैं, ब्लॉग्स पर विचार व्यक्त करते हैं, फेसबुक पर जन-सम्पर्क स्थापित करते हैं, ई-बुक्स पर विश्व का श्रेष्ठ साहित्य या अन्य विषय पढ़ते हैं, मौसम-खेल-राजनीति के बारे में जानकारी लेते हैं, फिल्में या धारावाहिक देखते हैं और कैद हो जाते हैं अपनी बनायी सीमाओं में। सचमुच मानवीय-आविष्कार की यह संचार-प्रणाली अदृश्य रूप से नियामक-शक्ति बनती जा रही है क्योंकि हमने बाँध दिया है अपनी-ही सम्भावनाओं का अनन्त आकाश।

चूँकि हम गाफ़िल रहते हैं अपनी ही दुनिया में, व्यापार में, राजनीति में, जीविकोपार्जन में, लिखने-पढ़ने-कैरियर बनाने में, खेलकूद-मनोरंजन में इसीलिए हमें आभास तक नहीं होता कि इसी जाल-जंजाल के वैद्युतिक-आवरण की परतों में लुक-छिप कर कौन बार-बार चोट कर रहा है हमारी स्व-तंत्रता पर, हमारी सांस्कृतिक-सोच पर, हमारे चिराचरित जीवन-मूल्यों पर। भौतिक-विज्ञान से उद्भूत भौतिकतावादी जीवन-दृष्टि से संचालित मनुष्य केवल यंत्र-मानव बनकर रह गया है। वह खोता जा रहा है अपनी स्वायत्तता, अपनी अस्मिता और आत्मबोध।

दूसरे महायुद्ध के बाद एकजुट हुए यूरोपीय-संघ और अमेरिका ने मिलजुल कर शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की अवधारणा के साथ अपने-अपने नुकसान की भरपाई करनी शुरू कर दी। इसी दौर में उनके औपनिवेशिक-शिकंजे से छूट कर आज़ाद होने लगी शेष दुनिया। भारत सहित दूसरे देशों की आज़ादी के साथ उनके हाथों से एक-एक करके निकलते जा रहे थे उनके साम्राज्य की ज़रूरतों के आर्थिक-संसाधन और वे बेचैन थे। ज़्यादातर सद्यः स्वतंत्र देशों का नेतृत्व साम्यवाद/समाजवाद की अवधारणा पर काम कर रहा था जिसमें वे प्रत्यक्ष हस्तक्षेप भी नहीं कर सकते थे। दूसरी ओर इन विकासशील देशों की विडम्बना थी कि विकास के मूल-संसाधन होने के बावजूद उनके कारगर इस्तेमाल के लिए आवश्यक धन और तकनीक से वे वंचित थे। इन देशों की इसी कमज़ोरी को लक्ष्य करते हुए यूरोपीय-संघ और अमेरिका ने नित-नवीन आविष्कारों से लैस वैज्ञानिक-तकनीक के सहारे पूँजीपरक-साम्राज्यवाद की मानसिकता के साथ प्रलोभनों के पिटारे खोल दिये। सिद्धान्ततः विपरीत होते हुए भी उनकी इस प्रच्छन्न रणनीति के जाल में कई देश आ चुके हैं, उनमें हम भी हैं।

संघर्षों के साथ विकास की ओर अग्रसर लोकतांत्रिक भारत उनके लिए मुफ़ीद चरागाह थी। किन्तु भारतीय समाज के मूल्यों और सांस्कृतिक-बोध के बीच प्रवेश का रास्ता न पाकर वे चोर-दरवाज़े तलाश करने लगे। इसी क्रम में सातवें दशक के अन्त में व्यक्तिगत-स्तर पर अंग्रेजी-माध्यम के स्कूल खुलने लगे, आठवें दशक में इस बाज़ार का विस्तार हुआ और बीसवीं सदी बीतते-बीतते पुनः प्रतिष्ठित हो गयी साम्राज्यवादी भाषा अंग्रेजी। अब तो इस भाषा

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

के माध्यम से वर्चस्व कायम करते हैं हमारे ही सत्ता-प्रतिष्ठान-न्यायपालिका, विधायिका, नौकरशाही और उद्योग-जगत।

यह तो हुई ज़ुबान काट कर स्वतंत्र-सोच को कुंठित कर देने की पहली साजिश जिसका असर वर्तमान युवा पीढ़ी पर साफ-साफ दिखलायी पड़ने लगा है। यद्यपि इस पद्धति के बीच विकसित मध्य-वर्गीय युवा अभी भी अपनी ज़मीन पर हैं किन्तु 21वीं सदी के आरम्भ से ही प्रचारित बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के वार्षिक-पैकेज को प्राप्त करने का लोभ भला किसे नहीं आकर्षित करता?

आर्थिक-उदारता के इसी चक्रव्यूह में व्यूहबद्ध है हमारी संस्कृति—धर्म, दर्शन, चिन्तन, साहित्य-सर्जन, संगीत-नृत्य-नाट्य आदि सभी ललित कलाएँ और फिल्में। कम्पनियों के इलेक्ट्रॉनिक जाल द्वारा निर्धारित, प्रायोजित बाजार भाव के बीच हम अपने अतीत-व्यतीत के 'एंटिक्स' और जीवन्त सर्जनशील सांस्कृतिक-उपदानों का विक्रय कर रहे हैं। यह केवल अर्थ-दारिद्र्य नहीं बल्कि अधिक-से-अधिक पाने की लालसा से उपजी आत्महीन-मनोवृत्ति है। इस अर्थ-दास, भाषा-भूषा-चिन्तन में परतंत्र, नव-गुलाम-मानसिकता का विश्लेषण एक सर्वथा अकल्पित, अनपेक्षित भविष्य का चित्र प्रस्तुत कर रहा है, जिससे हम आँखें नहीं चुरा सकते।

हमें अपनी सामाजिक-संरचना के बीच उभरती प्रत्येक चुनौती का सामना करने की इच्छाशक्ति को विकसित करना होगा। अपने ही आकाश को आच्छादित करती विद्युत्-तरंगों का नियमन करते हुए वापस लौटना होगा अपनी जड़ों की ओर जहाँ प्रकृति की कोख से जन्म लेती है संस्कृति। भौतिक-ऊर्जा के यौगिक-उपभोग के साथ आत्मिक-ऊर्जा के अन्तरिक्ष की ओर बढ़ते हुए जहाँ नये-नये क्षितिज खुलने लगते हों, वही है हमारा गन्तव्य, हमारा लक्ष्य...!

समय के भीतर समय को लाँघते
खुल रहे नित्य नूतन नव-नव क्षितिज,
भव-संक्रमण का दुर्धर्ष कालखण्ड यह
देता चुनौती, शक्ति है तो करो लक्ष्य-संधान!

सर्वेक्षण

● **शिक्षा और शिक्षक :** आखिर किसके नाम रोयें सामाजिक-विकास के ये प्राथमिक घटक। हज़ारों की संख्या में रिक्त-शिक्षक पदों को भरने के लिए पिछली सरकार ने लाखों आवेदन मँगाये। कई करोड़ रुपये मुफ्त में आ गये। वर्तमान सरकार भी नये सिरे से ऑनलाइन आवेदन करा रही है, लाखों बी०एड० डिग्रीधारी सामने हैं किन्तु पुन: पात्रता-परीक्षा के नाम पर यथास्थिति कायम है। दूसरी ओर कार्यरत शिक्षकों को बंधुआ-मजदूर मानकर उनसे जनगणना, राशन कार्ड, मतदाता परिचय-पत्र बनवाना जैसे कार्य करवाये जाते हैं। आखिर क्या होगा शिक्षा का? मात्र साक्षरता, शिक्षा नहीं होती।

●● **पशु से भी बदतर :** सर्वोच्च न्यायालय की यह टिप्पणी देश की नागरिक-सुरक्षा में तैनात पुलिस-तंत्र पर है। अभी पिछले दिनों दिल्ली एवं अन्य स्थानों पर हुए दुष्कर्मों के विरोध-स्वरूप उपजे जन-आक्रोश को नियंत्रित करने के लिये तैनात दिल्ली के पुलिसकर्मी द्वारा एक युवती को थप्पड़ मारने, अलीगढ़ में एक वृद्धा को लाठी से पीटने, पंजाब में शिकायत दर्ज कराने पहुँची युवती के वस्त्र-खींचने आदि के वीडियोक्लिप्स देखते न्यायमूर्ति श्री सिंघवी ने कहा कि ऐसा व्यवहार तो जानवर भी नहीं करते। साथ ही सरकारी पैरोकार एडिशनल सालिसिटर जनरल का मुँह बन्द करते हुए न्यायमूर्ति बोले कि—''यह मत कहना कि इन मामलों के दोषी पुलिस वाले निलम्बित कर दिये गये हैं।'' सर्वोच्च न्यायालय की यह टिप्पणी साबित करती है कि किस गर्त में जा रहा है हमारा समाज और कितनी संवेदनहीन हैं हमारी प्रशासनिक-ईकाईयाँ।

●●● **हिमाद्रि-तुंग-श्रृंग से :** सात दशक पहले के नौजवानों की यह रूमानी-प्रेरणा सन् 1962 के चीनी-आक्रमण के समय तार-तार हो गयी थी जब हमारी हिमालयी-सीमा में हज़ारों किलोमीटर के हिस्से पर कब्जा करते हुए चीनी-फौज सामने आ गयी। युद्ध भी हुआ, किन्तु लड़ते हुए पीछे हटने के आदेश के साथ बुझे-मन से हमारी पराजित सेना अपने सीमांत पर ठहर गयी। उस दु:खद घटना के पचास साल बाद पुन: चीनी-फौज ने वही हरकत दुहरायी है। पूर्वी लद्दाख के सीमान्त पर 19 किलोमीटर भीतर आकर उन्होंने अपनी लगभग एक पलटन फौज के साथ चौकी कायम कर ली है, कहने-भर को टेन्ट लगाये गये हैं। इसके पहले ही यह साम्राज्यवादी देश ब्रह्मपुत्र को बाँध चुका है, अरुणाचल प्रदेश पर आँख गड़ाये हुए है और हमारे रहनुमा बयान दे रहे हैं कि—''हालात पर हमारी नज़र है, बातचीत चल रही है, समस्या को सुलझा लिया जायेगा।'' हक़ीक़त के मद्देनज़र किस रूमानी-ख्वाब में गाफ़िल हैं हमारे रहनुमा? पता नहीं...।

●●●● **फेअरवेल-टू आर्म्स :** विश्व युद्ध के बाद लिखे गये अर्नेस्ट हेमिंग्वे के उपन्यास के सन्दर्भ अब प्रासंगिक हो रहे हैं—अपने शीर्षक में ही सही। पिछले दिनों एक दशक पहले के इराक-युद्ध में घायल/मृत्यु शय्या पर साँस गिनते एक अमेरिकी सैनिक ने अपना अन्तिम पत्र लिखा है जो इन दिनों अमेरिकी मीडिया, सेना, जनता और राजनेताओं के बीच चर्चा का विषय बना हुआ है। इस पत्र में अमेरिकी शासन-तंत्र के युद्धोन्माद, शक्ति-प्रदर्शन और सम्पत्ति की लालच में सामान्य सैनिकों के इस्तेमाल के प्रति आक्रोश व्यक्त किया गया है। इस पत्र के समान्तर अमेरिकी सुरक्षा-तंत्र का भेदन करते हुए बोस्टन और टैक्सास में विस्फोट हुए। इसी तरह आतंकी-विस्फोट के मृतकों और घायलों की दूसरी सूची हमारे यहाँ हैदराबाद और बैंगलूर के धमाकों से जुड़ी है। एक ओर पड़ोस-प्रायोजित आतंक के शिकार हम अपने सैनिकों का सिर कटा कर भी बातें करते रहते हैं, दूसरी ओर दुनिया की शस्त्र-निर्माता/निर्यातक-लाबी के नीति-नियामक लाशों की मीनारें खड़ी करते रहते हैं।

आखिर कब रुकेगा यह युद्धोन्माद यह शस्त्र-विप्लव?

क्यों इतना आतंक, ठहर जा ओ गर्वीले!
जीने दे सबको सुख से, तू भी सुख से जी ले।

—परागकुमार मोदी

भारत में अस्सी प्रतिशत द्विजाति (ब्राह्मण)

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र (शिमला)
पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

उपर्युक्त तथ्य का निर्णय मैंने गहरी खोज-बीन एवं समीक्षा के बाद किया है। **'द्विजाति'** शब्द भारतीय-संस्कृति का एक चमत्कारिक शब्द रहा है। सारे सामाजिक आँधी-बवण्डर द्विजातित्व के गहवर से ही उठते रहे हैं। यही शब्द वर्णाश्रम-व्यवस्था तथा उसकी परवर्ती विकृति जातिपरम्परा का भी मूलाधार रहा है।

भारतीय ऋषियों-महर्षियों ने सृष्टि के उष:काल में ही यह जीवनादर्श निश्चित कर लिया था कि हे देवों! हम आपकी कृपा से सौ वर्ष जियें तथा अपनी तीन पीढ़ियाँ देखें। बीच में हमारी जीवन-यात्रा भंग न हो—

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा
यत्रा नश्चक्राजरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्तु
मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥

इसी शतवर्षीय जीवन को पूर्ण वैज्ञानिक पद्धति से जीने तथा सार्थक बनाने के लिए हमारे तप:पूत ऋषियों ने चार आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ तथा संन्यास—प्रत्येक पचीस वर्ष) तथा चार क्रमिक जीवनलक्ष्यों की भी संकल्पना की थी। प्रत्येक पच्चीस वर्ष की अवधि में सम्पादनीय हमारे जीवनलक्ष्य थे—ब्रह्मचर्य से ज्ञानसिद्धि, गार्हस्थ्य से कामसिद्धि, वानप्रस्थ से धर्मसिद्धि तथा संन्यास से मोक्षसिद्धि। यह सारी व्यवस्था यद्यपि क्रमिक थी, तथापि इसके अपवाद भी समाज में मिलते थे।

परन्तु इन सारी व्यवस्थाओं से ऊपर था भारतीय जीवनपद्धति में **संस्कार-विधान**! हमारे त्रिकालज्ञ ऋषियों-मुनियों ने यह रहस्य हस्तामलकवत् देख लिया था कि मनुष्य की अक्षीण वासनायें, उसके अच्छे-बुरे कर्म ही, उसके पुनर्जन्म के एकमात्र कारण हैं। पुनर्जन्म में यद्यपि संसरण तो होता है आत्मा (चैतन्य) का ही जो कि हजारों-लाखों-करोड़ों प्राणियों में भी एक ही परमात्मा का अंश होती है, परन्तु इस मूल एकता के बावजूद उनकी अभिव्यक्ति एक दूसरे से पूर्णत: पृथक् होती है। कोई गोरा तो कोई काला, कोई गरीब तो कोई अमीर, कोई ज्ञानी तो कोई मूर्ख! आखिर एक ही परमात्मांश होते हुए भी करोड़ों-अरबों प्राणी परस्पर भिन्न क्यों होते हैं? उसका एकमात्र उत्तर है—अपनी अटल प्रकृति (स्वभाव, वासना) के कारण! पाप, अत्याचार, दुराचार में अटल आसक्तिवश ही मनुष्य, मरने के बाद पुन: उसी स्वभाव का पैदा होता है—

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः
मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षतिः॥
शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्॥

तो फिर, जन्मजन्मान्तर के पापपंकों में लिपटा क्षुद्र जीव मुक्ति के लिये प्रयत्नशील कैसे हो पायेगा? उसका उत्तर है—संस्कारों से। संस्कार शरीर का नहीं प्रत्युत आत्मा का। शरीर का संस्कार तो बाह्य है। स्नान करना, अच्छे वस्त्रालंकार धारण करना। शरीर के संस्कार से भी मनुष्य की प्रतिष्ठा बढ़ती है। वह सभा में बैठने योग्य (सभ्य) बन जाता है। परन्तु जिन संस्कारों से मनुष्य मोक्ष मार्ग की ओर प्रवृत्त होता है वे संस्कार उसकी आत्मा के होते हैं। दया, दान, परोपकार, विद्या, करुणा, सहानुभूति, आर्जव, शौच, क्षमा, धैर्य, अस्तेय अपरिग्रहादि सारे गुण, **शरीर के नहीं**, आत्मा के होते हैं। भारतीय ऋषियों ने इन्हीं सद्गुणों का आधान कर, मनुष्य को नि:श्रेयस (पारलौकिक कल्याण, मुक्ति) प्राप्त करने की योग्यता प्रदान की।

वस्तुत: प्रत्येक मनुष्य पैदा तो होता है संस्कारहीन ही। परन्तु इन्हीं उदात्त संस्कारों से उसे मानो दूसरा जन्म प्राप्त हो जाता है। भारतवर्ष में यह **द्विजता का संस्कार** ही जीवन की सार्थकता का मूल रहा है—**जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।**

मुख्य संस्कार सोलह होते हैं—गर्भाधान, प्रसवन, अन्नप्राशन, उपनयन, समावर्तन आदि। इन संस्कारों का लौकिक एवं अलौकिक महत्त्व क्या था? ये हमें कैसे मोक्षमार्ग पर आरूढ़ करते थे? इन सब तथ्यों को लेकर स्मृतियों तथा धर्मशास्त्रों में महनीय व्याख्यायें मिलती हैं। प्राचीन भारत में, सम्पूर्ण समाज इन संस्कारों के प्रति सविशेष उन्मुख था। यथासमय हरेक व्यक्ति अपने बच्चे का संस्कार करता ही था, क्योंकि संस्कारहीन व्यक्ति का जीवन समाज में पशुवत् हेय एवं निन्द्य माना जाता था। संस्कारहीनों को 'व्रात्य' कहा जाता था तथा उन्हें यज्ञों में शामिल नहीं किया जाता था। उन्हें लाल पगड़ी पहन कर बाहर बैठने तथा यज्ञ-प्रक्रिया देखने मात्र की अनुमति थी। भारतीय समाज में संस्कारहीनों के प्रति तुच्छता का भाव था। उनके प्रति प्राय: सुसंस्कृतों का एक ही भाव था—संस्कारहीना: पशुभि: समाना:। अर्थात् संस्कारहीन मानव पशु के समान होते हैं।

परन्तु यह सोचना सरासर गलत होगा कि भारत में किसी को जानबूझ कर संस्कारहीन अथवा शूद्र बनाया जाता था। वस्तुत: जो लोग कुसंगतिवश उत्पथ हो जाते थे, जिनमें आत्मोत्थान की इच्छा ही मर जाती थी या जो गुणवत्ता की दौड़ में यथाकथंचित् पिछड़ जाते थे—ऐसे ही लोग संस्कारच्युत होते थे। गो कि उनके संस्काराधान के द्वार सदैव खुले रहते थे।

संस्कारच्युत होने का सबसे बड़ा दण्ड था संस्कारहीनों (शूद्रों) के प्रति संस्कारवानों की ओछी दृष्टि। संस्कारवान् तो विद्या के अध्ययन-अध्यापन, राष्ट्ररक्षा एवं व्यापारादि को जीवन का लक्ष्य बना कर ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य-वर्ग में विभक्त था। परन्तु संस्कारहीन व्यक्ति इन्हीं तीनों वर्गों के सेवक बन कर जीवन-यापन करते थे। ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य को ही **द्विज या द्विजाति** कहा जाता था—द्विः जातिः जन्म यस्य सः अर्थात् दो बार हुआ है जन्म जिसका वही द्विजाति है। प्रथम जन्म माता-पिता के रजवीर्य, संयोग से तथा दूसरा जन्म, संस्काराधान द्वारा आत्मबल को उद्दीप्त करने पर!

परन्तु वैदिक-पौराणिक युग का वह भारत अब मात्र अतीत की गाथा बन कर रह गया है। द्विज अथवा द्विजाति बनने की वह अदम्य उत्कण्ठा तथा संस्कारों के वे अनुष्ठान प्राय: समाप्त से हो गये हैं। **द्विजता** सिमट कर अब मात्र ब्राह्मणों में समा गई है। कुछ और भी वर्ग के लोग द्विजता के प्रतीकभूत मोटे-मोटे यज्ञोपवीत पहने दिखाई देते हैं। परन्तु अन्तश्चेतना से वे कितने और किस प्रकार के द्विज हैं, यह कह पाना कठिन है।

अब से प्राय: पाँच हजार वर्ष पूर्व हुए अठारह दिवसीय महाभारत युद्ध के अनन्तर ही भारतीय समाज का सर्वविध क्षरण होने लगा था। यद्यपि उस युग में भी संस्कारच्युत प्रभूतमात्रा में थे। तथापि अपने किसी न किसी गुण या कौशल के कारण समाज में वे भी समाहत तथा काम्य थे। परन्तु संस्कारहीनता का यह प्रतिशत उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया और यह अस्सी प्रतिशत तक पहुँच गया है। पूरे भारतवर्ष का जायजा लिया जाय तो पुराने उपनयनादि व्रत करने-कराने वाले लोग अब बीस प्रतिशत से अधिक नहीं मिलेंगे। वे भी प्राय: उपहास के पात्र हैं तथा संस्कारहीनों के बहुमत द्वारा हाशिये पर धकेल दिये गये हैं।

परन्तु स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद का जो भारतीय समाज मैं देख रहा हूँ उसमें तो संस्कारहीनों का ही बोलबाला है। लुच्चे, लफंगे, बड़े बापों के नकेलहीन गुर्गे, अँगूठा छाप करोड़पति के बेटे, जुआरी, व्यभिचारी, सट्टेबाज, रंगदारी करने वाले, बदज़बान, काँछ के कच्चे, गाँव-गिराँव तथा बाजार-चौराहे की राजनीति करने वाले—इन सब की बन आई है। और यही बन बैठे हैं आज के **द्विजाति**! सुनने में थोड़ा

विचित्र लगेगा। परन्तु सच मानिये यही अस्सी प्रतिशत लोग हैं आज के द्विजाति। शूद्र तो वे हैं जो चरित्रवान् हैं, राष्ट्रभक्त हैं, संवेदनशील, सर्वोदयी तथा उपकारी प्रवृत्ति के हैं। शूद्र वे हैं जो मनसा, वाचा, कर्मणा शुद्ध हैं, जिनका तन-मन पवित्र है और जो आस्तिक हैं, आस्थालु हैं। ये बेचारे सर्वथा निरुपाय एवं असहाय हैं। ये थाने में जाते हैं तो सिपाही भी इनसे सीधे मुँह बात नहीं करता। ये डर के मारे गाँव के बेईमान प्रधान से अपने ही अधिकार की चीनी या तेल नहीं माँग पाते। ये सर्वत्र उपेक्षित हैं।

तो क्या आज के जो नये द्विजाति हैं उनका भी 'दूसरा जन्म' यानी संस्कार हो रहा है? जी हाँ, जी हाँ! उनका भी संस्कार हो रहा है, और अधुत संस्कार हो रहा है। आइये, इन नये द्विजातियों के षोडश संस्कारों की समीक्षा करें।

पहला है **कुबीज-संस्कार**!

यह संस्कार किया या कराया नहीं जाता, प्रत्युत स्वयं हो जाता है। यह सहज, स्वाभाविक एवं नैसर्गिक होता है। यह संस्कार सीधे जन्मदाता पिता से सन्तान को ही मिलता है। हमारे समाज में सम्प्रति जितने भी बण्ड-भण्ड-निशाचर हैं, जितने भी लोकसन्तापक रावण हैं, जितने भी धूर्त, ठग, कृतघ्न, क्षुद्र, दुराचारी, व्यभिचारी तथा बहुरूपिये हैं वे सब इसी कुबीज-संस्कार की देन हैं।

लतखोर-संस्कार का समय प्राय: उम्र का आठवें से पन्द्रहवाँ साल होता है। यह संस्कार भी स्वत: स्फूर्त ही होता है। इसके प्रकट होते ही जातक माँ-बाप तथा अभिभावकों के क्लच से स्वयं को पूर्ण स्वतंत्र कर लेता है। आप पूछते रहें, कहते रहें, डाँटते रहें। वह बोलेगा कुछ नहीं। बस, **निघरघट** बना सुनता रहेगा और जब आप दुश्शासन की तरह पसीना-पसीना होकर बैठ जायेंगे तो वह मन्द मुस्कान के साथ चलता बनेगा। भोजन के समय घर में आ जाना तथा शेष समय में अछन्न रहना इस संस्कार का वैशिष्ट्य है। प्राय: इस संस्कार से अनुप्राणित जातक राष्ट्र की राजनीति अथवा सिने जगत् में प्रतिष्ठित होते हैं।

रावणसंस्कार माँ-बाप तथा कुल-जाति-गोत्र के लोग मिलकर बड़े जश्न के साथ सम्पन्न करते हैं। इस संस्कार में बच्चे को वह सब करना सिखाया जाता है जिससे जवार में सबका नाकोदम हो जाय। बच्चा दूकान पर चाय पियेगा, पैसा नहीं देगा। मुफ्त सब्जी ले आयेगा। मुफ्त बस की यात्रा करेगा। पैसा माँगने पर जिस किसी को भी पीट देगा। रावण के अत्याचार दिन दूने, रात चौगुने बढ़ते हैं। धीरे-धीरे वह इलाके की वेदवतियों तथा रम्भाओं पर भी अपनी मुहर लगाता है। जब उसकी छिनैती, रंगदारी और अपहरणादि की कीर्ति, गाँव-गिराँव की सीमा पार करती दिल्ली में बैठे उसके नाना माली-सुमाली तक पहुँच जाती है तो वे उसे दण्डकारण्य कान्स्टीचुएंसी से सांसद का टिकट दे देते हैं।

नहुषसंस्कार प्राय: पदप्राप्ति के बाद सम्पन्न होता है। पुरोहित विश्वरूप का वध कर देने पर जब इन्द्र ब्रह्महत्या (वृत्रासुर) के भय से भाग खड़ा हुआ तो ब्रह्मा ने देवताओं के अनुरोध पर, पृथ्वीलोक के यशस्वी सम्राट् नहुष को कुछ दिनों के लिये इन्द्रपद पर अभिषिक्त कर दिया। परन्तु इन्द्र का सारा सुख-वैभव भोगते-भोगते अचानक एक दिन नहुष की लार टपक पड़ी—इन्द्राणि के लिये! सोचा—जब इन्द्र का सारा सुख-वैभव मेरे लिये है तो एक 'इन्द्राणी' ही मेरे लिये क्यों नहीं? उन्होंने इन्द्राणी से मिलने की इच्छा प्रकट की। नहुष का पापसंकल्प भाँप कर इन्द्राणी गुरु बृहस्पति की शरण में पहुँची। बृहस्पति ने अत्यन्त सरल उपाय बता दिया—बेटी! इन्द्र को सन्देश दे कि वह सप्तर्षियों द्वारा वहन की जाती पालकी में बैठ कर आये! कामातुराणां न भयं न लज्जा! वह ऐसा अवश्य करेगा और सप्तर्षियों के शाप से ही नष्ट हो जायेगा।

वही हुआ। सप्तर्षि-गण जीवों को बचाते, लँगड़ाते पालकी लेकर आगे बढ़े। परन्तु इन्द्राणी से मिलने को अधीर नहुष उन्हें फटकारता रहा—सर्प, सर्प! अर्थात् बढ़ो, जल्दी करो। तभी क्रोध में जलते-भुनते महर्षि अगस्त्य ने उसे सचमुच सर्प बनने का शाप दे दिया। इन्द्राणी का सतीत्व खण्डित होने से बच गया।

नहुष की परम्परा के वयोवृद्ध सदस्य सम्प्रति माननीय नारायणदत्त तिवारीजी हैं। वैसे तो इतिहास प्रारम्भ हो जाता है पं० नेहरू से ही, जिनकी लोकव्यापी कीर्ति में कई नाम जुड़े रहे। परन्तु कुछ दिन पूर्व समाचारपत्रों में प्रकाशित लार्ड माउण्टबैटन की व्यथा कथा ने तो अश्रुविगलित ही कर दिया। नेहरू का शची प्रेम अद्भुत था।

नहुष संस्कारियों की भारी भीड़ है राजनीति एवं सिने जगत् में। अमरमणि जैसे एकाध तो ठीक नहुष की तरह ही अभिशप्त अजगर बने कारागार का सेवन कर रहे हैं। सिने जगत् में तो यह आम बात है। वहाँ पहल कभी नहुष की ओर से होती है तो कभी स्वयं शची की ओर से भी हो जाती है। बेचारे राजकपूर नर्गिस और वैजयन्तीमाला का सपना ही देखते रह गये। गरमटकन देवानन्द और सुरैया के मिलन मार्ग में मुई नानी आ खड़ी हुई। बेचारी रेखा पुरानी कहावत (ताड़ से गिरा खजूर पर अटका) को झुठलाती खजूर (विनोद मेहरा) से उछली (१) तो ताड़ (महानायक बिग बी०) पर अटकी। परन्तु जयाजी ने ऐसा झकझोरा ताड़ को (सास-ससुर के साथ) कि वहाँ से भी नीचे आ गिरी। परन्तु अपने 'शचीप्रणय' को साबित कर दिखाया मेरी बसन्ती 'भउजी' ने। सब कुछ निभ गया आराम से।

सुबरन-संस्कार भी प्राय: प्रौढ़ावस्था में ही सम्पन्न होता है। जिन्दगीभर के फटेहाल भिखमंगे जब कर-बल-छल से शासन में मंत्रीपद पा जाते हैं तो भंगेड़ियों की तरह बौरा जाते हैं। तब उन्हें केवल दो चीजें दिखाई पड़ती हैं। एक तो यह कि उनके अधिकार में कितनी भारी-भरकम रकम है? और दूसरी बात यह कि उसे काटने/पचाने के लिए कितना समय अपेक्षित है?

सुबरन मोह के संस्कार ने भी बड़े-बड़ों की खटिया खड़ी कर दी है। चारपाई पर गद्दे के नीचे साढ़े चार लाख की नोट बिछाये पूर्व केन्द्रीय संचारमंत्री पं० सुखराम शर्माजी को तो यही संस्कार खा गया। परन्तु उनका भी नम्बर काट दिया (उम्र में) उनके बड़े भाई ताऊ बेनीलाल के कुलदीपक पूर्व मुख्यमंत्री बुढ़ऊ ओमप्रकाश सिंह चौटाला ने। सुवर्णमोह में फँसे ए० राजा, कानीमोझी, सुरेश कलमॉडी, मधु कोड़ा तथा शिबू सोरेन की कथा तो फिलहाल पुरानी पड़ चुकी है।

कुकुर संस्कार छठाँ है। परन्तु शिखर पर पहुँचने के लिए यह अनिवार्य है। यह संस्कार मनुष्य को **कुक्कुरत्व-वरण** की प्रेरणा देता है। जब तक आप कुत्ते की तरह, कौरा पाने के लिए जिस किसी के सामने लांगूल-चालन नहीं करने लगेंगे, प्रति सेकण्ड पाँच-सात की गति से जीभ नहीं लपर-लपर करने लगेंगे, चारों खाने चित्त होकर पीठ के बल जमीन पर 'झाऊ नृत्य' नहीं करने लगेंगे—कोई आप से प्रभावित कैसे होगा? नौकरी चाहे सेना की हो, चाहे सिविल क्षेत्र की—अपने बॉस को प्रसन्न रखने के लिए यह 'श्वानवृत्ति' अचूक मंत्र है।

कुत्ते का सर्वोत्तम गुण है झूठी शान-शौकत तथा आत्म प्रतिष्ठा को **प्रेस्टिज प्वॉइण्ट** न बनाना। कुत्ता विस्मरणशील तथा संशोधनवादी होता है। उसका यही सद्गुण राजनैतिक सफलता का मूलमंत्र है। जिस गली में, जिस दरवाजे पर कुत्ता पिटता है, घण्टे भर बाद ही पुन: पूँछ हिलाता वहीं पहुँच जाता है। ठीक यही हालत चुनाव लड़ने वाले नेता की भी है। वह सारा अपमान भूल कर वहीं भीख माँगने पहुँचता है जहाँ से खदेड़ा गया था। जैसे-जैसे 14वां संसदीय चुनाव समीप आ रहा है इस संस्कार का कौतुक बढ़ता जा रहा है। देखते रहिये, आगे-आगे होता है क्या?

नये द्विजातियों के इन्हीं षट् संस्कारों से यह आलेख समाप्त करता हूँ। मुझ शूद्रवर्ग के प्राणी पर इनकी कृपा बनी रहे, बस यही कामना है। ■

संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास

डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी

आकार डिमाई *पृष्ठ* 576

सजिल्द : 978-81-7124-960-2 • रु० 500.00
अजिल्द : 978-81-7124-961-9 • रु० 275.00

राधावल्लभ त्रिपाठी का संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास सचमुच में एक अभिनव इतिहास है। यह संस्कृत साहित्य की पाँच सहस्र से अधिक वर्षों की परम्परा का विशद परिचय तो देता ही है, इस साहित्य की सुदीर्घ विकास यात्रा का उद्भवकाल, स्थापना काल, समृद्धिकाल तथा विस्तार काल इन चार कालों के क्रमिक सोपानों में विभाजन के द्वारा विद्वान् लेखक ने हमारी साहित्यिक धरोहर का पुनर्व्यवस्थापन और पुनर्मूल्यांकन भी नये आलोक में यहाँ किया है। संस्कृत के अनेक अज्ञात किन्तु महत्त्वपूर्ण रचनाकारों का परिचय पहली बार इस कृति में समाविष्ट हुआ है और प्रसिद्ध महाकवियों की समीक्षा की गई है।

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

राजतरंगिणी

परिचय—राजतरंगिणी के प्रणेता महाकवि कल्हण हैं। कल्हण का वास्तविक नाम कल्याण था, कल्हण कश्मीरी भाषा में उसका अपभ्रंश प्रतीत होता है। इन्होंने अपने पिता का नाम महामात्य चंपक प्रभु बताया है। कश्मीर के 1098 ई० के लगभग परिहासपुर में इनका जन्म हुआ था। जोनराज के अनुसार ये कुलीन ब्राह्मण थे। महाभारत जैसा यह विशाल कलेवर वाला ग्रन्थ कल्हण ने 1148 ई० में लिखना आरम्भ करके दो या तीन वर्षों में पूरा किया, इसकी पूर्ति सन् 1150 ई० में हुई।

कश्मीर से उन्हें बहुत प्यार था। वे कहते हैं—बड़े-बड़े गुरुकुल, केसर और ठंडा जल—ये चीजें स्वर्ग में भी दुर्लभ हैं, जो यहाँ आम हैं। तीनों लोकों में यह धरती सबसे सुन्दर है, इस धरती पर भी उत्तर दिशा सबसे सुन्दर है, उत्तर दिशा में भी गौरीगुरु हिमालय सबसे रमणीय है और उस हिमालय के क्षेत्र में भी कश्मीर मण्डल सबसे सुन्दर है (राज० 1/42-43)।

विषयवस्तु—प्रथम तरंग में कल्हण ने गोनंद प्रथम के वर्णन से काव्य का आरम्भ करते हुए युधिष्ठिर के समय तक का इतिहास लिखा है वह 75 राजाओं का वर्णन किया है। द्वितीय तरंग में उसके आगे का 192 वर्ष का इतिहास है। तृतीय तरंग में गोनंदवंश के अंतिम राजा बालादित्य तक का 536 वर्षों का इतिहास दिया गया है। चतुर्थ तरंग में 260 वर्षों में हुए 17 राजा वर्णित हैं। पाँचवें तरंग से कल्हण का इतिहासज्ञान परिपक्व व प्रामाणिक होता हुआ दिखायी देता है। इसमें अवंतिवर्मा, संकटवर्मा, सुगंधादेवी, शंकरवर्धन आदि के शासनकाल का विस्तृत वर्णन है। षष्ठ से अष्टम तरंगों में कल्हण ने अपने समय की घटनाओं का जो लेखाजोखा प्रस्तुत किया है, वह सम्पूर्ण संस्कृत-साहित्य में अप्रतिम है। यद्यपि कल्हण की कृति मुख्य रूप से कश्मीर को केन्द्र में रखती है, पर इसमें सारे देश के इतिहास, भूगोल और संस्कृति का जितना विशद विस्तृत परिचय मिलता है, उतना रामायण के पश्चात् अन्य किसी ग्रंथ में नहीं मिलता।

ऐतिहासिक दृष्टि तथा रचनाप्रक्रिया—राजतरङ्गिणी का अर्थ राजाओं की नदी है। इस नदी में हम राजाओं की उत्थान और पतन, आना और जाना उसी तरह देख सकते हैं जैसे हम नदी के किनारे खड़े होकर उसकी लहरों का उठना और गिरना देखते हैं। इसका विभाजन सर्गों के स्थान पर तरंगों में किया गया है। इतिहासकार के रूप में कल्हण भूतार्थकथन (सच्ची-सच्ची बात कहना) को अपना आदर्श मानते हैं। उन्होंने आरम्भ में ही अपने काव्य का मानदंड विवृत किया है—

श्लाघ्यः स एव गुणवान् रागद्वेषबहिष्कृता।
भूतार्थकथने यस्य स्थेयस्येव सरस्वती॥
(1/7)

(वही गुणवान् प्रशंसनीय है, जिसकी सरस्वती राग और द्वेष से रहित होकर भूतार्थकथन में स्थिर है।)

राजतरङ्गिणी की रचना आरम्भ करने के पूर्व कल्हण ने वह सारी तैयारी की थी, जो एक अच्छे इतिहासकार को करनी चाहिये। उन्होंने प्राचीन अभिलेखों, दानपत्रों, पुराणों और साहित्यिक ग्रंथों का अध्ययन किया था, किंवदन्तियों और जनश्रुतियों की जानकारी प्राप्त की थी, और सारे देश में भ्रमण करके अपने समय के भूगोल और इतिहास को प्रत्यक्ष भी जाना था। राजा हर्ष इतिहास के सबसे क्रूर और आततायी राजाओं में से एक था। अपने पिता की राजा हर्ष पर अत्यधिक श्रद्धा से कल्हण को अरुचि थी। कल्हण के पिता ने दरद के मोर्चे पर हर्ष की ओर से लड़ते हुए बड़ा पराक्रम प्रदर्शित किया था। वे जीवन के अंतिम पड़ाव पर सर्वथा असहाय होकर आत्मत्राण के लिए छटपटाते हर्ष के इने-गिने विश्वासपात्र अधिकारियों में से एक थे। राजा हर्ष जब अपने जीवन की रक्षा के लिए भागा, तो उसका साथ देने वाले दो सेवकों में एक-मुक्त-चंपक का नौकर था। यह संभव है कि कल्हण को हर्ष की दारुण हत्या तथा उस समय घटी अनेक घटनाओं की जानकारी इस मुक्त से प्राप्त हुई हो। श्रीकंठचरित के प्रणेता महाकवि मंख कल्हण के समकालीन थे। उन्होंने अपने महाकाव्य के अंत में वर्णित कविगोष्ठी में कल्हण को उपस्थित दिखाया है, तथा कल्हण ने भी उनका राजा जयसिंह के विदेश मंत्री के रूप में उल्लेख किया है। कल्हण अपने समय की सारी राजनीतिक उथल-पुथल के तटस्थ द्रष्टा बने रहे, तभी वे राजतरङ्गिणी की रचना कर सके। उन्होंने राजा सुस्सल के शासनकाल (1112-20 ई०), राजा हर्ष के अमानुषिक कृत्यों तथा हर्ष के बेटे भिक्षाचर के सैनिकों के द्वारा जनता पर किये गये भयावह अत्याचारों का जो वर्णन किया है, वह आँखो देखा यथार्थ है। राजा हर्ष की निर्मम हत्या (1101 ई०), डामरों का भयानक आतंक, सामन्तों और अमात्यों के षड्यन्त्र तथा कुचक्र, उच्चल, सुस्सल, रड्ड, सल्हण, भिक्षाचर आदि का राजसत्ता हथियाने के लिए दारुण प्रयत्न, इनका थोड़े-थोड़े समय के लिए शासक बन कर फिर राजनीति के खिलवाड़ में पदच्युत होना—इन सब घटनाओं के कल्हण साक्षी रहे, और इनका प्रामाणिक निरूपण उन्होंने किया। अपने समय के चित्रण में कल्हण बहुत निर्भीक होकर सचाई उघाड़ते हैं, अपने से पहले के समय को वे अनुश्रुतियों, आख्यानों-उपाख्यानों तथा अन्य अनेक स्रोतों से पहचानने का यत्न करते हैं। कुरुवंश के युधिष्ठिर के समय या कलिकाल के अवतरण से लगा कर अपने समय की जो कथा कल्हण कहते हैं, उसमें हम अपना इतिहास भी पहचान सकते हैं और इतिहास हमने किसे माना यह भी जान सकते हैं।

इस तरह के वर्णनों में कल्हण राजतन्त्र और अर्थशास्त्र की प्रामाणिक जानकारी भी प्रस्तुत करते चलते हैं। वे यह बताते हैं कि किस तरह अकाल के समय राजा तुंजीन और राजा उच्चल ने व्यापारियों से थोक में सारा अनाज खरीद लिया और फिर उसे बहुत सस्ते दामों पर आम लोगों के बीच बिकवाया। जब तुंजीन ने देखा कि कौड़ियों के मोल पर भी अनाज खरीदने की दरिद्र लोगों में शक्ति नहीं है, तो उसने भण्डारे खोल कर अपना सारा कोश ही खाली कर डाला।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

चलो, अंग्रेजी में चलें

—सुधीश पचौरी

जब से अंग्रेजी के लेखकों की करोड़ों की इनकम की खबर पढ़ी है, सीने पर साँप लोट रहा है। ईर्ष्या की आग में जला जा रहा हूँ। अंग्रेजी लेखकों को कोस रहा हूँ। उच्चाटन, मारण का जाप कर रहा हूँ : ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं चामुंडा अंग्रेजी राइटरम् मिलियनम् डॉलरम् डाउनम् कुरु कुरु स्वाहा! ओम् हिन्दी मारकेटम् बूमम् बूमम् कुरु कुरु!!

एक अंग्रेजी लेखक की किताब की एडवांस बुकिंग दस करोड़ रुपये में हुई है। दूसरे की सात करोड़ रुपये में हुई है, तीसरे ने पांच करोड़ रुपये झटक लिए हैं। लखपतियों का तो शुमार नहीं। आप हिन्दी लेखकों को विश्व के मुकाबले बराबर का मानने का मुगालता पालें, तो पाल लें। मुझे कोई मुगालता नहीं है। जिसका जितना दाम है, उसका उतना नाम है! हिन्दी अंग्रेजी से पचपन गुना कम दाम रखती है। वहाँ एडवांस में डॉलर मिलते हैं, इधर प्रकाशन के बाद दो-चार टके मिल जाएँ तो 'भाग्य मानो जग गए!' झूठ न बोलिए, मन को न बहलाइए। सच बताइए न नामवर जी, अशोक जी, केदार जी, कुँअर जी आपकी हिन्दी अंग्रेजी से कितने दरजा नीची है?

आप हिन्दी में विचारधारा जोतते बोते रहे। लेखकों को संघर्ष करने का, जोखिम लेने का, खतरों से खेलने का आवाहन करते रहे और लेखक लगा रहा। दो-तीन पीढ़ियाँ पता नहीं किस दुश्मन पर कहाँ-कहाँ अपने-अपने धनुष बाण चलाती रहीं? कभी साम्राज्यवाद पर प्रहार करती रहीं, कभी पूँजीवाद पर करती रहीं, आजकल बाजार पर करने में बिजी हैं, लेकिन न अमेरिका मरा, न पूँजी मरी और न बाजार मरा। हिन्दी कोसती रह गई। अंग्रेजी डॉलर कमाती चली गई।

हिन्दी के लेखक को इसका पता नहीं है कि उसका अवमूल्यन (डिवैल्यूएशन) घर बैठे हो रहा है। हिन्दी एक गुना है, तो अंग्रेजी डॉलर लेकर पचास-पचपन गुना है! डॉलर महँगा होता गया है। उसी अनुपात में रुपया कमजोर होता गया है। उस दिन कोई कह रहा था कि हिन्दी वाले भी बहुत कमाने लगे हैं। अरे हजार-दो हजार, पाँच-पचास हजार भी कोई कमाई है? हिन्दी में किस लेखक ने एक करोड़ एडवांस में कमाए? मैं इसीलिए हर बजट में गरीबी की रेखा के अलावा हिन्दी की रेखा खींचना चाहता हूँ। हिन्दी खुद एक गरीबी रेखा है। अंग्रेजी अमीरी की रेखा है। कोई बजट हिन्दी को गरीबी रेखा से ऊपर नहीं उठाता।

हिन्दी का रुतबा नहीं है अंग्रेजी का है। हिन्दी का लेखक ज्यादा बनेगा, तो सिर्फ आपका सेवक बनेगा। उसके पत्रलेखन में यही नजर आता है। पहले 'आपका विनीत' कहा करता था, आजकल आपका साथी भी लिखे है, तो लगता है 'आपका सेवक लिख' रहा है। हिन्दी वाला बच्चों को प्रोफेशनल बनाता है खुद संतयुग में रहने का ढिपान रचता है। वह कब कहेगा कि मेरी हिन्दी का रेट यह है।

हिन्दी में अगर कोई रेट की बात करता है, तो उसे घटिया बाजारवादी कहकर निंदित कर दिया जाता है। हिन्दी में गरीबी को ही मूल्य मान लिया जाता है। अहा! वह गरीब लेखक है। क्रांतिकारी तो होगा ही। क्रांति से गरीबी का ऐसा दो टूक सम्बन्ध प्रगतिशीलता की मौलिक डाइलेक्टिक्स है। खुद एनजीओ चलाएँगे, बच्चों को अमेरिका पठाएँगे और गरीबी पर गर्व करेंगे।

तुम गरीबी पर गर्व करते रहे। वे डॉलर ले उड़े। कुछ कवि-कथाकार सपने देखते हैं : अंग्रेजी में अनूदित हों, तो अन्तर्राष्ट्रीय हो जाएँ। डॉलर बटोरें। हिन्दी में क्या धरा है? चलो, अंग्रेजी में चलें!

— 'हिन्दुस्तान' से साभार

भारत और चीन में अंग्रेजी : सोच में फर्क

संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में जहाँ अंग्रेजी विषय को प्राथमिकता दी जा रही है, वहीं पड़ोसी देश चीन के प्रमुख विश्वविद्यालयों ने अंग्रेजी की अनिवार्यता को खत्म कर दिया है। चीनी विश्वविद्यालयों की वार्षिक स्वतन्त्र प्रवेश परीक्षा के कार्यक्रम की घोषणा के दौरान पाठ्यक्रम से अंग्रेजी को हटाने का ऐलान भी किया गया।

यू०पी०एस०सी० का तर्क है कि आज के दौर में अंग्रेजी विश्वभर में सम्पर्क की प्रभावी भाषा बन गई है। ऐसे में सिविल सेवा परीक्षा के जरिए चुने जाने वाले नौकरशाहों को अंग्रेजी का बेहतर ज्ञान होना जरूरी है। इसी आधार पर नए नियमों में अंग्रेजी विषय के अंकों को मेरिट से जोड़ा गया है। हालांकि, इन नियमों पर विभिन्न राजनीतिक दलों के विरोध के चलते सरकार ने यू०पी०एस०सी० की अधिसूचना पर फिलहाल रोक लगा दी है। वहीं चीन के प्रमुख विश्वविद्यालयों के शिक्षाविदों का मानना है कि अंग्रेजी बौद्धिक कौशल की परिचायक नहीं हो सकती।

नई सोच का शिल्पकार

उन्हें प्राकृतिक रोशनी से नहाई पारदर्शी संरचना बनाने में माहिर वास्तुकार कहें, नयी सोच के साथ प्रयोग करने वाला कलाकार, या फिर अपनी डिजाइनों में आध्यात्मिक आयाम और काव्यात्मक शैली पिरोने वाला शिल्पकार! वाकई इस वर्ष के प्रिट्ज्कर अवार्ड से सम्मानित, जिसे वास्तुकला का नोबल भी कहा जाता है, जापानी वास्तुकार **टोयो इतो** को किसी खास परिचय में बांधा नहीं जा सकता। अपनी अभिनव सोच से उन्होंने जिस तरह प्राय: हर तरह के भवनों का खाका खींचा है, उन्हें देखकर ही शायद प्रिट्ज्कर ज्यूरी ने उन्हें 'अमर इमारतों का जनक' कहा है, और उनकी कृतियों को फ्रेंक गेरी, टाडाओं एंडो, रेंजो पायनो जैसे चर्चित वास्तुविदों की रचनाओं की कड़ी माना। उनकी बनाई इमारतों में भौतिक और वर्चुअल (आभासी) दुनिया का अद्‌भुत संगम दिखता है। पारदर्शी सेंडाई मीडियाटेक्व पुस्तकालय, टामा आर्ट यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी, ताइवान का वर्ल्ड गेम्स स्टेडियम, लंदन की सर्पेंटाइन गैलरी जैसी संरचनाएँ कुछ ऐसी ही हैं, जिन्होंने टोयो को पहचान दी। फिर भी उन्हें अपनी बनाई संरचना में भी खोट नजर आता है। इसकी वजह यह है कि टोयो के लिए काम से सन्तुष्ट हो जाने का अर्थ है, अपने लिए एक सीमा तय करना, और उन्हें इसी सीमा (बंधन) से ऐतराज है। शायद इसलिए कई अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिलने के बाद भी वह आम लोगों के लिए एक अदद घर का सपना पूरा करने के लिए तत्पर हैं और भूकम्प-रोधी मकान की नई-नई संरचना तैयार करते रहते हैं।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com / sales@vvpbooks.com
vvpbooks@gmail.com

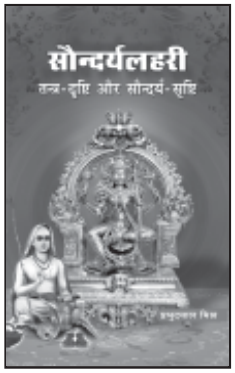

सौन्दर्यलहरी : तन्त्र-दृष्टि और सौन्दर्य-सृष्टि

प्रभुदयाल मिश्र

श्री प्रभुदयाल मिश्र योग और शक्तिपात में दीक्षित तथा वैदिक साहित्य के अन्वेषक-अध्येता हैं। उनकी 'सौन्दर्यलहरी-काव्यानुवाद' मध्यप्रदेश संस्कृत अकादेमी द्वारा 'व्यास-सम्मान' से अलंकृत है। इस कृति को जहाँ मूर्धन्य विद्वानों ने सराहा है, वहीं यह अनेक साधकों की 'पूजा का पर्याय' बनी हुई है। लेखक ने इस कृति के इस 'विशेष संस्करण' का कलेवर पुस्तक के दर्शन, तंत्र और साहित्य पक्ष को अक्षुण्ण रखते हुए तैयार किया है।

आकार डिमाई | *पृष्ठ* 128

सजिल्द : 978-81-7124-895-7 • रु० 150.00

(पुस्तक का एक अंश)

सौन्दर्यलहरी का विषय तो भगवती का स्तवन ही है, परन्तु उसकी शैली ऐसी है कि स्तुति के बहाने पूर्वार्द्ध आनन्दलहरी के 41 श्लोकों में श्रीविद्या के रहस्य, हादि कादि विद्या का उद्धरण, षट्चक्र वेध का प्रकरण, ग्रन्थित्रय का वर्णन इत्यादि साधनोपायों का दिग्दर्शन कराकर जीव-ब्रह्म की एकता पर साधक का लक्ष्य कराया गया है। इस अर्थ में इस ग्रन्थ में श्रौत, योग और तन्त्र सिद्धान्त का अद्भुत समन्वय हुआ है जिससे ब्रह्म एवं जीव का एकत्व प्राप्त हो। यह श्रीविद्या प्रत्यक्ष राज राजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी है। श्री शब्द का तन्त्र शास्त्री एक अर्थ विष भी बताते हैं। उनके अनुसार इसे गले में धारण करने वाले भगवान शिव को इसीलिए श्रीकण्ठ कहा जाता है। इस विष को शिव ने श्रीयन्त्रकार निवेश्य बना लिया। उनके चिरकाल तक इस आराधना में निरत रहने के पश्चात् ही उन्हें चन्द्रकला का अमृतस्वाद मिला। प्रथमार्ध आनन्दलहरी के 41 श्लोक भौतिक स्तर पर ब्रह्म की चित् शक्ति में प्रियता अर्थात् सौन्दर्य के भाव को जागृत करते है और चेतन स्तर पर आत्मानन्द को। आनन्द की लहरियों का अनुभव मानसिक एवं बौद्धिक तो है ही, जड़-चेतन, नाम-रूपात्मक पदार्थों का सौन्दर्य भी लहरियों, स्पन्दनों की ही रचना है—

नरं वर्षीयांसं नयनविरसं नर्मसु जडं
तवापाङ्गालोके पतितमनुधावन्ति शतशः।
गलद्वेणीबन्धाः कुचकलशविस्त्रस्तसिचया
हठात् त्रुट्यत्कांच्यो विगलितदुकूला युवतयः॥ 13॥

प्रश्न है कि साधना और सिद्धि क्या त्याग अथवा विकर्षण है? वस्तुतः हम त्याग उसका करते हैं जो अप्रिय है, असुन्दर है। किन्तु यह अप्रियता और कुरूपता वस्तुतः कहाँ हैं, किसमें है? यह कितनी वस्तुनिष्ठ कितनी व्यक्तिनिष्ठ है? क्या प्रिय और सुन्दर के विषय में भी यही प्रश्न नहीं पूछा जा सकता?

क्या वास्तव में वह हमारी दृष्टि ही नहीं है जहाँ से सुन्दर अथवा असुन्दर की सृष्टि होती है। और क्या आकर्षण की प्रियता तथा विकर्षण की अप्रियता ही सुन्दर और असुन्दर को जन्म नहीं दे देती? भला यह सुन्दर सृष्टि कर्म किसी विकर्षण अथवा असुन्दरता की सृष्टि कैसे हो सकता है?

तपस्वी आकर्षण से हीन
यजन कर सकते तुच्छ विचार! (कामायनी)

शंकर का यह सौन्दर्योपक्रम एक महान तपस्वी का सृष्टि-कर्म है। इसमें जड़, चेतन, स्थूल, सूक्ष्म और बाह्य-आन्तर समानान्तर चलते हुए लोक का अतिक्रमण कर देहातीत, भावातीत, गुणातीत और द्वन्द्वातीत हो जाते हैं—

मनस्त्वं व्योम त्वं मरुदसि मरुत्सारथिरसि
त्वमापस्त्वं भूमिस्त्वयि परिणतायां न हि परम्।
त्वमेव स्वात्मानं परिणमयितुं विश्ववपुषा
चिदानन्दाकारं शिवयुवति भावेन बिभृषे॥ 35॥

योग और तन्त्र में कुंडलिनी व्यष्टि में महाशक्ति का पर्याय है। वेद में जिसे उच्छिष्ट ब्रह्म कहा गया है, जिसे पुराणों में शेष कहा जाता है, वही तन्त्र में मूलाधार चक्र में स्थित तीन फेरे डाले कुंडलिनी शक्ति है जो सामान्यतया सुप्तावस्था में रहती है। मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा चक्रों का वेध कर यह शक्ति सहस्रार में शिव सायुज्य की चेष्टा में रहती है। यह अनुभव देह और देहातीत दोनों की परिधि है। इसका साधन और सिद्धि भी लौकिक और लोकातीत दोनों है। इसमें किसी नकार या स्वीकृति को स्थान नहीं है। साधन की इस परमावस्था में अमृत है, सर्व इच्छा सम्पूर्ति है, मंगल है और चिदानन्द का चैतन्य है—

सुधासिन्धोर्मध्ये सुरविटपिवाटीपरिवृते
मणिद्वीपे नीपोपवनवति चिन्तामणिगृहे
शिवाकारे मंचे परमशिवपर्यङ्कनिलयां
भजन्ति त्वां धन्याः कतिचन चिदानन्दलहरीम्॥ 18॥

आनन्द की इस तुरीयावस्था में परा का अनुगान वैखरी में होता है। ऋग्वेद के ज्ञान सूक्त के द्रष्टा ऋषि बृहस्पति 'सक्तुमिव तितउना' के द्वारा मध्यमा स्तर से पश्यन्ती तक पहुँचते हुए कह उठते हैं—

देखकर भी देखता जिसको नहीं है एक
अथवा दूसरा सुनता नहीं जिसको स्वयं सुनकर
प्रकट वह इस तरह होती कभी है अन्य को
सुवसना भार्या पति के लिए जैसे
वस्त्र का परित्याग कर देती। (ऋग्वेद, 10/71)

परा के इस पश्यन्ती रूप के एक वर्तमान द्रष्टा ऋषि श्री ओरोविन्दो को इस प्रसंग में याद करना मुझे बहुत आवश्यक लगता है। श्री ओरोविन्दो का सावित्री महाकाव्य भी सौन्दर्यलहरी के ही समान आख्यान और दर्शन की समानान्तर भूमिकाओं में संतरित होता है। सावित्री भाग तीन के दूसरे अध्याय में देवी के सौन्दर्य की संस्तुति कवि ने निम्न पंक्तियों में की है—

The Formless and the Formed were joined in Her
Immensity was exceeded by a look
A face revealed the crowded Infinite
The boundless joy the blind world-forces seek
Her body of beauty mooned the seas of bliss.

अंग्रेजी के रोमाण्टिक युग के कवि कीट्स को महान सौन्दर्यवादी कवि माना जाता है। वर्ड्सवर्थ, कालरिज, शैली और कीट्स की चतुष्टयी की हिन्दी समीक्षक प्रसाद, महादेवी, निराला और पंत से तुलना भी किया करते हैं।

इन कवियों ने सुन्दरता को शरीर के स्तर से उठाकर उसके प्रकृति से तदात्मीकरण का अभिनव कार्य किया। सौन्दर्य के देहान्तरण की इस प्रक्रिया में जिस अतीन्द्रिय सौन्दर्य की सृष्टि हुई उसमें क्षरण, नश्वरता, और नकार के स्थान पर एक सार्वभौमिक सत्य की स्वीकृति देखी गई। भारतीय दर्शन के पुरुषार्थ चतुष्टय काम, अर्थ, धर्म और मोक्ष के समान सुन्दर, सत्य और शिव अपनी तद्रूपता में जीवन की सार्थकता प्रतिबिम्बित करने लगे। कीट्स ने सौन्दर्य को 'ए थिंग ऑफ ब्यूटी इज ए ज्वाय फोर ऐवर' कहते हुए घोषित किया—

Beauty is Truth, Truth Beauty
That is all ye know on earh
And need to know

सुमित्रानन्दन पंत ने कीट्स के सत्य के एक स्वर को शिव तक विस्तार देते हुए सौन्दर्य के इस समारोह को विश्व कल्याण को समर्पित कर दिया—

वही प्रज्ञा का सत्य स्वरूप
हृदय में बनता प्रणय अपार
लोचनों में लावण्य अनूप
लोक सेवा में शिव अविकार

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी
www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

भारतीय मूल के कारभारी टेक्सास यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष नियुक्त

शिक्षा के क्षेत्र में एक और भारतीय मूल के अमेरिकी ने देश का नाम रोशन किया है। डॉक्टर विस्ताप एम कारभारी को आर्लिंग्टन स्थित प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। पुणे यूनिवर्सिटी से अपनी उच्च शिक्षा पूरी करने वाले कारभारी हंट्सविले स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ अल्बामा में इस समय विशेष प्रशासनिक अधिकारी एवं शैक्षणिक मामलों के कार्यकारी उपाध्यक्ष हैं।

हिन्दी समेत 23 भाषाओं का जानकार है 17 वर्षीय डोनर

अमेरिका का 17 वर्षीय युवा टिमोथी डोनर 23 भाषाओं का जानकार है, जिनमें से एक हिन्दी भी है। कुछ दिनों पहले ही डोनर ने यू-ट्यूब पर एक वीडियो अपलोड किया था, जिससे लोगों को उसके बारे में पता चला। इस वीडियो में वह 20 अलग-अलग भाषाओं में बात करते दिखाई दे रहा है। खास बात यह है कि डोनर को किसी भी भाषा को सीखने में कुछ हफ्तों का ही समय लगता है। हिन्दी के अलावा उसे अरबी, क्रोशियन, डच, अंग्रेजी, फारसी, फ्रेंच, जर्मन, हौंसा, डिब्रू, इंडोनेशियाई, इटैलियन, मंदारिन, ओजीब्यू, पर्शियन, पश्तो, रशियन, स्पैनिश, स्वाहिली, टर्किश, वोलोफ और यिदिश भाषाएँ भी आती हैं।

भारतीय दंड संहिता और साक्ष्य अधिनियम अब उर्दू में

कानूनी पेशे से जुड़े और उर्दू के जानकारों के लिए एक अच्छी खबर है। देश में पहली बार भारतीय दंड संहिता का ताजी रात-ए-हिंद और भारतीय साक्ष्य अधिनियम का कानून शहादत-ए-हिन्द के नाम से अनुवाद किया गया है। इसके अलावा आपराधिक कानून से जुड़ी जानकारी हासिल करने के लिए उर्दू डिक्शनरी भी तैयार की गयी है। इसमें आपराधिक कानून में इस्तेमाल किए जाने वाले 52 हजार से ज्यादा कानूनी शब्दों को संग्रहित किया गया है।

300 साल पुरानी संस्कृत कृति बेल्जियम में प्रकाशित

जर्मन मूल के व्याकरणाचार्य और कई भाषाओं में पारंगत पादरी फादर जोहान अर्नस्ट हैंक्सलेदेन द्वारा करीब तीन सौ साल पहले रचित संस्कृत व्याकरण का बेल्जियम में विमोचन किया गया।

आरनोस पादरी अकादमी के निदेशक राय थोत्तातिल ने बताया कि 'ग्रामैटिका ग्रांडोनिका' की 88 पृष्ठों की पांडुलिपि तीन सदी से अधिक समय से गायब थी और पिछले साल रोम के एक पुस्तकालय में यह पांडुलिपि मिली। हैंक्सलेदेन ईसाई पादरी के रूप में 13 दिसम्बर 1700 को भारत पहुँचे थे। उन्होंने यहाँ वेलूर के पास 1712 में सैंट फ्रांसिस जेवियर चर्च बनवाया और शेष जीवन वहीं रहे। जर्मन, संस्कृत, मलयालम, लैटिन, पुर्तगाली और तमिल सहित कई अन्य भाषाओं में पारंगत हैंक्सलेदेन ने मलयालम-पुर्तगाली और संस्कृत-पुर्तगाली शब्दकोष भी तैयार किए। उन्होंने यूरोपीय विद्वानों और विचारकों के बीच भारतीय सांस्कृतिक धरोहर और संस्कृति के महत्त्व का प्रचार-प्रसार करने का प्रयास किया।

सामवेद का पद्यानुवाद कर रहे रवीन्द्र जैन

प्रख्यात संगीत निर्देशक रवीन्द्र जैन इन दिनों सामवेद का पद्यानुवाद कर रहे हैं। वह कुरान के तीस पारों के पद्यानुवाद के विमोचन की तैयारी में हैं। सब कुछ ठीक रहा तो जून में सऊदी के किंग के हाथों कुरान के पद्यानुवाद की पुस्तक और सीडी का विमोचन होगा।

निजी संग्रहालय में शामिल हुआ हजार का सिक्का

केन्द्र सरकार द्वारा तंजावुर के वृहदीश्वर मन्दिर के एक हजार वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में जारी किया गया एक हजार रुपए का सिक्का संग्रहालय में शामिल हुआ है। डाक टिकट और मुद्रा संग्रहकर्ता लोकेश गाँधी ने बताया कि वर्ष 2010 में वृदीश्वर मन्दिर के एक हजार वर्ष पूर्ण होने पर जारी हुए इस सिक्के का वजन 35 ग्राम है और इसमें 80 प्रतिशत चाँदी और 20 प्रतिशत ताँबे का प्रयोग हुआ है। उन्होंने बताया कि यह सिक्का स्मारक सिक्का है जो कि सिर्फ किसी घटना विशेष की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए निकाला जाता है।

हाईटेक पुस्तक : गीता

तकनीक और आध्यात्म के अनूठे संगम के चलते अब बाजार में बोलती गीता भी उपलब्ध हो गई है। मल्टीमीडिया प्रिंट रीडर (एम०पी०आर०) के माध्यम से यह सम्भव हुआ है। 190 पेज वाली इस गीता में सेंसर के माध्यम से बार कोडिंग की गई है। लोग जिस श्लोक को सुनना चाहेंगे, उसे छूते ही सुन लेंगे। पहले मूल संस्कृत श्लोक है, फिर हिन्दी रूपान्तरण।

गीता प्रकाशन के व्यवस्थापक प्रह्लाद ब्रह्मचारी ने बोलती गीता का प्रकाशन कराया है। तकनीकी सहयोग आदर्श प्राइवेट लिमिटेड भोपाल और प्रकाशन गोरखपुर के गीता प्रकाशन ने किया है।

लिपिबद्ध किया जाएगा उत्तर प्रदेश का इतिहास

सेंटर फॉर हिस्टोरिकल एंड कल्चरल स्टडीज एण्ड रिसर्च उत्तर प्रदेश के इतिहास को पुन: लिपिबद्ध करेगा। इसके लिये सेंटर ने उत्तर प्रदेश के इतिहास को लिखने के लिए टीम बनायी है। टीम का नेतृत्व जम्मू विश्वविद्यालय के प्रो० जिगर मुहम्मद करेंगे। प्रो० एस०एन० सिन्हा की स्मृति में दो दिवसीय सेमिनार के समापन में इन बातों पर मुहर लगी।

सेमिनार का समापन विगत दिनों वाराणसी में हुआ। 'क्षेत्रीय इतिहास लेखन में राष्ट्रीय इतिहास की अवधारणायें' विषयक सेमिनार में ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यों पर भी चर्चा हुई।

एक भाषा का दूसरी भाषा में लिखित एवं मौखिक उपयोग

साफ्टवेयर विशेषज्ञों में शुमार आइ०आइ०टी० काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के नवनियुक्त निदेशक प्रो० राजीव संगल ने 18 लैंग्वेज ट्रांसलेशन सिस्टम तैयार किया है। इसमें से आठ सार्वजनिक रूप से उपलब्ध हैं। उन्होंने 11 संस्थानों के समूह (कंसोर्टियम) की अगुवाई करते हुए भारतीय भाषा के नौ साफ्टवेयर बनाए हैं जिसके आधार पर कम्प्यूटर साफ्टवेयर की मदद से एक भाषा का दूसरी भाषा में लिखित एवं मौखिक उपयोग किया जा सकता है।

मलाला की कहानी

पाकिस्तानी किशोरी मलाला यूसुफजई ने अपने संस्मरण के प्रकाशन के लिए तीस लाख अमेरिकी डॉलर (करीब 16 करोड़ रुपये) का अनुबंध किया है। लड़कियों की शिक्षा की हिमायत करने के कारण तालिबान की गोली का शिकार बनी मलाला को दुनियाभर में महिलाओं के अधिकारों की पैरोकार के रूप में जाना जाता है।

कल्पना का विज्ञान-सत्य

हैरी पॉटर का काल्पनिक लबादा तो याद ही होगा आपको? जिसे पहनते ही व्यक्ति अदृश्य हो जाता है। वैज्ञानिक, हैरी पॉटर स्टाइल के इस लबादे को बनाने के काफी करीब हैं। इसके अन्तर्गत चीजों को एक निश्चित प्रकाश तरंग में अदृश्य किया जा सकेगा। यदि प्रयोग सफल होता है तो यह अपने आप में एक नई क्रान्ति होगी। यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास के वैज्ञानिकों ने मेंटल क्लोक नाम का एक झीना आवरण बनाया है, जिससे ढकी चीज अदृश्य हो जाती है। न्यू जनरल ऑफ फिजिक्स के ताजा अंक में यह अध्ययन प्रकाशित किया गया है।

सेंट्रल लाइब्रेरी विश्वस्तरीय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय ने अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप हासिल कर लिया है। कुलाधिपति डॉ० कर्ण सिंह ने नवनिर्मित साइबर लाइब्रेरी का लोकार्पण किया। 250 कम्प्यूटरों पर छात्र एवं छात्राएँ सुबह छह से

रात्रि 12 बजे तक अध्ययन कर सकेंगे। शीघ्र ही यह सुविधा 24 घण्टे के लिए हो जायेगी।

दुरुस्त हुई 200 साल पुरानी किताब

राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी का पुस्तक प्रेम जगजाहिर है। हाल में उनके निर्देश पर राष्ट्रपति भवन के पुस्तकालय में जर्जर हो चुकी 200 साल पुरानी पुस्तक की मरम्मत की गई। पुस्तक एनग्रेविंग्स : फ्रॉम द पिक्चर्स ऑफ द इटैलियन, फ्लेमिश, डच एंड इंग्लिश स्कूल्स ब्रिटिश वायसराय जॉर्ज कर्जन को 1904 ई० में त्रिपुरा नरेश ने भेंट की थी। यह किताब विलियम एडवर्ड फॉस्टर ने लिखी थी, जिसका प्रकाशन 1807 में हुआ था।

कलाकृतियों की नीलामी

भारतीय समकालीन व आधुनिक कलाकृतियाँ अमेरिका में आयोजित एक नीलामी में 67 लाख डॉलर (करीब 36 करोड़ रुपये) में बिकी। सॉथबी नीलामी घर द्वारा आयोजित इस नीलामी में वासुदेवजी गायतौंडे की एक कलाकृति नौ लाख 65 हजार डॉलर (करीब 5.2 करोड़ रुपये) में बिकी है।

ये सभी कृतियाँ संग्रहकर्त्ता व लेखिका अमृता झावेरी के संग्रह की हैं। सॉथबी ने अपने बयान में कहा है, मशहूर भारतीय पेंटर सैयद हैदर रजा की 'राजस्थान 1' नाम की कलाकृति 8.09 डॉलर (करीब 4.4 करोड़ रुपये) में बिकी। वहीं फ्रांसिस न्यूटन सूजा की 'द क्रूसिफिक्शियन' की बोली 5.57 लाख डॉलर (करीब तीन करोड़ रुपये) तक पहुँच गई, जो उसकी असली कीमत 3.5 लाख डॉलर (1.9 करोड़ रुपये) से लगभग दोगुनी है।

लाइब्रेरियों का उद्धार

अब तक उत्तर प्रदेश की स्वास्थ्य सेवाओं की बेहतरी के लिए सहयोग देने वाला बिल और मिलिंडा गेट्स फाउन्डेशन अब उत्तर प्रदेश और बिहार के पुस्तकालयों के उद्धार के लिए आगे आया है। फाउन्डेशन की मंशा दोनों राज्यों की पब्लिक लाइब्रेरियों को ऐसे मॉडल पुस्तकालय में तब्दील करने की है जिससे कि वे समुदायों की बदलती जरूरतों को पूरा कर सके। उद्देश्य यह भी है कि लाइब्रेरियों के जरिये सूचना का प्रचार-प्रसार और उपलब्धता बढ़ाकर पुस्तकालयों को जन सशक्तिकरण के माध्यम के तौर पर विकसित किया जाए।

पाइलट परियोजना के तौर पर दोनों राज्यों के चुनिंदा पब्लिक लाइब्रेरियों को मॉडल पुस्तकालय के तौर पर विकसित करने की मंशा जतायी गई है। अपनी योजना को अमली जामा पहनाने के लिए फाउन्डेशन ने पाँच गैर सरकारी संगठनों को प्रोजेक्ट पार्टनर के तौर पर चुना है। इनके सहयोग से फाउन्डेशन ने प्रदेश के आठ पुस्तकालयों का कायाकल्प करने में दिलचस्पी दिखायी है। इनमें इलाहाबाद की स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी, उन्नाव, गाजियाबाद, रायबरेली, बाराबंकी, लखीमपुर खीरी व बस्ती की डिस्ट्रिक्ट सेंट्रल लाइब्रेरी व कानपुर की डिस्ट्रिक्ट लाइब्रेरी शामिल हैं।

यूजीसी की ई-पीजी पाठशाला

सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सुदूर क्षेत्रों तक उच्च शिक्षा के प्रचार-प्रसार की कवायद के अन्तर्गत सरकार ने स्नातकोत्तर स्तर पर 77 विषयों में ई-सामग्री तैयार करने की परियोजना को मंजूरी दी है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा के राष्ट्रीय मिशन (एन०एम०ई०आई० सी०टी०) के अन्तर्गत मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू०जी०सी०) को इस कार्य का दायित्व सौंपा है। यू०जी०सी० के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि इस परियोजना के अन्तर्गत स्नातकोत्तर स्तर पर सामाजिक विज्ञान, कला, ललित कला, मानविकी, प्राकृतिक एवं गणितीय विज्ञान, भाषा, साहित्य जैसे विभिन्न विषयों में उच्च गुणवत्ता वाले पाठ्यक्रम आधारित परिचर्चात्मक सामग्री तैयार करने का प्रस्ताव किया गया है। उन्होंने कहा कि इस परियोजना के अन्तर्गत तैयार की जा रही ई-सामग्री समर्पित शिक्षण प्रबन्धन प्रणाली के साथ पोर्टल के जरिये उपलब्ध करायी जायेगी।

द बे साम बुक

दुर्लभ किताबों में एक मानी जाने वाली 'द बे साम बुक' नीलामी के लिए रखी गयी है। यह किताब मैसाचुसेट्स में प्रकाशित हुई थी और इसे अमेरिका में छपी पहली किताब का सम्मान हासिल है। वर्ष 1640 ई० में इस किताब का प्रकाशन किया गया था और तब इसकी 1,700 प्रतियाँ छापी गई थीं। आज इस किताब की महज 11 प्रतियाँ ही बची हैं। वर्तमान में जो प्रति नीलामी के लिए रखी गई है, उसे बोस्टन के ओल्ड साउथ चर्च के संग्रह से लिया गया है, जहाँ इसकी दो प्रतियाँ थीं। दिलचस्प है कि 1947 ई० में भी इसकी एक प्रति नीलामी के लिए रखी गयी थी जो एक लाख 51 हजार डॉलर की रिकॉर्ड कीमत में बिकी थी। उस समय यह सबसे अधिक कीमत पर नीलाम होने वाली किताब थी। हालाँकि इस समय सबसे महँगी किताब का रिकॉर्ड जॉन जेम्स आडुबांस की 'बर्ड्स ऑफ अमेरिका' के नाम दर्ज है, जो 2010 ई० के दिसम्बर में साढ़े ग्यारह लाख अमेरिकी डॉलर में नीलाम हुई थी।

'द बे साम बुक' भजनों का एक संग्रह है, जिसे मैसाचुसेट्स के प्लायमाउथ में कॉलोनी बसाने के 20 साल बाद कुछ तीर्थयात्रियों ने लिखा। इनमें शामिल थे—जॉन कॉटन, रिचर्ड माथर और जॉन इलियट। असल में उस समय कुछ पूरितन (16वीं और 17वीं सदी में अंग्रेजी प्रोटेस्टेंट का एक महत्त्वपूर्ण समूह) इंग्लैण्ड से लाए गए भजनों की किताब के अनुवाद से सन्तुष्ट नहीं थे और चाहते थे कि भजनों का संग्रह हिब्रू भाषा की असली किताब की तरह हो। नतीजतन उन्होंने अनुवाद की जिम्मेदारी माथर और इलियट जैसे लोगों को सौंपी। दिलचस्प है कि इस किताब को छपवाने के लिए चंदा किया गया था और 1608 में इसे बोस्टन भेजा गया, क्योंकि तब वह प्रिंटिंग का बड़ा केन्द्र था, ऑक्सफोर्ड और कैंब्रिज से भी बेहतर।

'बनारस उत्सव' की तैयारी

काशी के संस्कृति एवं कलाप्रेमियों ने शहर को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने के लिए 'बनारस उत्सव' के आयोजन की तैयारी शुरू की है। आयोजन अक्टूबर-13 के तीसरे हफ्ते प्रस्तावित है। सप्ताहव्यापी आयोजन की तिथि और स्थान अभी तय होना है। प्रारम्भिक रूपरेखा के अनुसार आयोजन में साहित्य, संगीत, कला और संस्कृति के जरिए बनारसीपन झलकेगा। आयोजन में राजन-साजन इंस्टीट्यूट फॉर परफार्मिंग आर्ट (रसिपा) व कला प्रकाश की सक्रिय भूमिका है।

अब किताबों की दुनिया 'बुकफेस'

21वीं सदी मतलब, सोशल नेटवर्किंग का युग। आप खारिज करें या स्वीकार, मगर विशेष फर्क नहीं पड़ने वाला। यह रेस का घोड़ा बन चुका है। बहरहाल, इसी कड़ी में विशेषज्ञों को लंबे समय से एक चिंता सता रही थी.... और वह थी युवाओं की किताबों से बढ़ती दूरी, किताबों को पढ़ने से कतराना।

तो अब फेसबुक, ट्वीटर, लिंक्डइन, आरकुट तथा अन्य सोशल वेबसाइट्स की तरह इजाद कर दी गई है 'बुकफेस' साइट्स। इसको मूर्तरूप दिया है केरल विश्वविद्यालय के कम्प्यूटेशनल बायोलाजी एवं बायो इन्फार्मेटिक्स की शोध टीम ने।

बुकफेस पर आप मनपसंद किताबों को ढूँढकर पढ़ सकते हैं। किताबों को पढ़ते वक्त टैग व आपने कितने पेज पढ़े, इसकी काउंटिंग भी कर सकते हैं।

मोबाइल स्क्रीन पर कॉमिक का लुत्फ

रोमांच व एक्शन के साथ गुदगुदाहट व अध्यात्म से जुड़े मनोरंजन के विभिन्न साधनों में से एक कॉमिक्स की अपनी अनोखी दुनिया है। अब पाठकों को दूरसंचार कम्पनियाँ मोबाइल कॉमिक्स की सुविधा प्रदान कर रही हैं। बैकग्राउण्ड साउण्ड व पात्रों के हिलने डुलने की सुविधा के साथ कॉमिक्स की ई-रीडिंग उपभोक्ता को आनन्द का एक अलग अहसास करा रही हैं।

एयरटेल, आइडिया, टाटा डोकोमो, एयरसेल, वोडाफोन मोबाइल कॉमिक यानी मोमिक्स सुविधा ग्राहकों को दे रही हैं। 40 पन्नों की कॉमिक बुक को 15 स्लाइड में समेट कर मोबाइल कॉमिक बनाया गया है।

प्रकाश-पथ का यात्री

[एक सिद्ध योगी की आत्मकथा]

योगेश्वर

आकार डिमाई | *पृष्ठ* 208

अजिल्द : 978-81-89498-61-0 • रु० 200.00

देवभूमि से भी अधिक महिमावान् भारत की ऋषि-मुनि सेवित तपोभूमि में अतीत से लेकर आज तक विभिन्न प्रकार के असंख्य अलौकिक संतों, महात्माओं, योगियों और तपस्वियों ने जन्म लेकर, अपने लोकोत्तर जीवन से प्राप्त प्रेरणा और प्रकाश से असंख्य लोगों का पथप्रदर्शन कर ज्योतिर्धर का कल्याण किया है। श्री योगेश्वरजी ने ज्योतिर्धरों की उस प्राणवान परम्परा को आगे बढ़ाया है। उनकी इस आत्मकथा के अध्ययन से इस सत्य की झाँकी मिलेगी।

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

अड़तीस दिन का उपवास

दर्शन के अन्य अनुभव

8 और 9 दिसम्बर 1947 मेरे जीवन की महत्वपूर्ण तिथियाँ रही हैं। उन दिनों माँ की विशेष कृपा-प्राप्ति हेतु मैंने अंत:करण से अधिक से अधिक प्रार्थना की। देवप्रयाग में एक साथ लंबे अर्से तक उपवास करने से शरीर कुछ अशक्त-सा हो गया था फिर भी साधना की सफलता से अंतर आनंदमय था। दूसरी विशेष सफलता का दिन भी समीप आ रहा था। उस दिन की अलौकिक अनुभूति के लिए हृदय आतुर हो रहा था। हृदय रात-दिन तड़पता था। माँ, आज तो तुम्हारी कृपा होनी ही चाहिए। मैंने अब तक कितने कष्ट सहे हैं, अब तो तुम्हें दर्शन देना ही होगा। तुम्हारी असीम कृपा के बिना मुझे न शांति मिलेगी; न चैन होगा।

नौ तारीख की रात को ऋषिकेश में देवकीबाई धर्मशाला में प्रार्थना करने बैठा। अंधेरे खंड में माँ की कृपामयी मूर्ति अब प्रकाशित हो उठेगी। माँ का सुधामृत स्वर अभी सुनाई देगा ऐसी आशा थी। जैसे-जैसे समय बीतता जाता था, मेरी व्याकुलता भी बढ़ती जाती थी।

अंत में वह मंगलमय घड़ी आ पहुँची। मेरी नसें तनने लगीं। अपने आप मेरा देहभान चला गया। माँ की कृपा से समाधिस्थ अवस्था प्राप्त हुई, और उस अवस्था में माँ ने दर्शन दिये। माँ के मुख पर दिव्य-प्रकाश और शांति थी। उन्होंने गुलाबी रंग की साड़ी पहन रखी थी। उनका समस्त रूप कितना सुंदर था! ऐसा दिव्य रूप मैंने जगत् में कहीं भी नहीं देखा था। उनके केश फैले हुए और लंबे थे।

मैंने भावविह्वल हो प्रार्थना की : ''माँ, अपना तेजमय प्रकाश फैला दो। चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश हो जाय, ऐसा कर दो। माँ मुझे प्रतिदिन दर्शन दो।''

माँ ने कहा : ''अब तो बहुत से काम करने हैं। अभी तो पक्षी को पिंजरे में बंद किया है।''

''तुम मुझे रोज रात को दर्शन दो।''

''नहीं, यह संभव नहीं।''

''क्यों नहीं? दो-चार दिन के अंतर से तो आना ही होगा।''

''अच्छा। दो-चार दिन के अंतर से जरूर आऊँगी।''

''आपके आगमन का निश्चित समय भी बता दें।''

''निश्चित समय नहीं। लेकिन इच्छानुसार आऊँगी जरूर।

उसके बाद माँ अदृश्य हो गई। कितनी बार मैंने पुकारा लेकिन जवाब न मिला। कितनी मधुर वाणी! स्वरूप भी कितना अलौकिक! उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। केवल अनुभव किया जा सकता है।

मुझे जब पूर्ण जागृति हुई तो बाहर की घड़ी ने दो बजाये। समाधि जैसे आई थी वैसे ही अपने आप पूरी हो गई। माँ की कृपा से समाधि या सिद्धि शरणागत भक्त और साधक को अपने आप मिलती है।

इस अनुभूति से मुझे अलौकिक आनंद प्राप्त हुआ। फिर भी माँ की इच्छानुसार पूर्ण कृपा की प्राप्ति अब भी शेष थी। देहरादून में 14 तारीख को माँ ने पुन: दर्शन देने और अनुग्रह करने को कहा था। उस दिन माँ की कृपा से मेरी सभी इच्छा पूरी होगी। ऐसा मेरा विश्वास था। अपनी सतत जागृति से ही यह सोच सका।

देहरादून में मैं योगिराज भैरवदत्त जोशी का अतिथि बना। मुझे देखकर वे प्रसन्न हुए। दो-तीन दिन प्रार्थना और प्रतीक्षा के बाद आखिर 14वीं तारीख आ पहुँची। वह पूरा दिन मैंने मूक चिंतन में व्यतीत किया। मूक इसलिए कि मेरी साधना गुप्त रीति से चलती थी। परम कृपालु माँ और मेरी अंतरात्मा के अतिरिक्त उसका साक्षी और कोई नहीं था। बहुत से लोग मेरी साधना से अपरिचित थे। ऐसी साधना को गुप्त रखना भी एक प्रकार का तप ही था। मेरे लिए ऐसा आत्मसंयम सहज हो गया था। उन दिनों मुझे रात-रात भर नींद नहीं आती थी। रात का समय मैं बैठकर व्यतीत करता था। एक-दो घंटा समाधि का अलौकिक लाभ मिलता था। उससे निद्रा की पूर्ति हो जाती थी। जगत् में जब से मैं विवेक द्वारा जागृत् हूँ, तबसे निद्रा की मोहिनी मैंने यथाशक्ति दूर की है। जो पूर्णता को प्राप्त करना चाहता है उस मोहिनी से मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए। निद्रा का समय काटकर मुक्ति के लिए पुरुषार्थ करना चाहिए। रात का शांत समय उसके लिए अनुकूल है।

लेकिन मेरा वह शांत समय बीतता जा रहा था। मध्यरात्रि हो चुकी थी। फिर भी माँ के दर्शन न हुए। मेरी प्रार्थना और प्रखर होती गई। आँख से अश्रु बहने लगे। हे माँ, आप क्यों कृपा नहीं करतीं? मुझमें कोई विशेष योग्यता नहीं। केवल आपका ही आधार है। मुझे साधना की भी समझ नहीं। माँ! माँ! आप कृपावर्षा क्यों नहीं करतीं? अब मुझे और न तरसाओ, दर्शन दो माँ।

कुछ ही समय में मुझे अपने आप देहातीत दशा प्राप्त हुई। कोई स्वनामधन्य, प्रात:-स्मरणीय सिद्धपुरुष मुझे माँ के पास ले गये। माँ का स्वरूप जैसे प्रकाश का पुंज था। मैंने कहा, मुझे तो माँ का मधुमय मुख ही देखना है। उस दर्शन के अमृत का पान करना है।

इतने में मुझे अति लावण्यमय और प्रेमपूर्ण उज्ज्वल, मनहर मुख के दर्शन हुए। गुलाबी रंग की साड़ी में माँ का स्वरूप भी गुलाबी था। मैंने भावविभोर दशा में माँ से लिपट कर माँगा : ''माँ, मुझे रिद्धि-सिद्धि प्रदान करो।''

माँ ने शांत स्वर से कहा : ''सर्व प्रकार की सिद्धि प्राप्त हो।''

''विश्व का कल्याण?''

''विश्व का कल्याण भी तेरे हाथ हो।''

कुछ और बातें करके माँ अदृश्य हो गई। मेरी समाधि-अवस्था देर तक चलती रही। बीच-बीच में जागृति आ जाती थी। आँखें बरस रही थीं। उस अति आनंददायक, अवर्णनीय अवस्था को व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं, मन उस आनंद से ओत-प्रोत है, किंतु वाणी उसे प्रकट नहीं कर सकती।

मेरे दो मनोरथ पूर्ण हुए, अब उसे व्यावहारिक जीवन में साकार करना था न। माँ का दर्शन भी मुझे जागृति में इच्छानुसार निरंतर करना था।....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी
www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

पुरस्कार के लिए नामित

'ब्रिंग अप द बॉडीज' उपन्यास पर बुकर और कोस्टा पुरस्कार पा चुकीं हिलेरी मैंटल को ब्रिटेन के तीसरे प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार 'वूमेंस' के लिए नामित किया गया है। इस पुरस्कार का विजेता दुनिया भर की अंग्रेजी महिला लेखिकाओं में से चुना जाता है। विजेता को 30 हजार पौंड की राशि मिलती है।

सुगाथा कुमारी को सरस्वती सम्मान

मलयालम की प्रसिद्ध कवियत्री और सामाजिक कार्यकर्ता सुगाथा कुमारी के काव्य संग्रह 'मनलेझुतु' को प्रतिष्ठित सरस्वती सम्मान के लिए चुना गया है। के०के० बिरला फाउंडेशन ने विगत दिनों यह घोषणा की। पुरस्कार में दस लाख रुपये नगद, प्रशस्ति पत्र तथा प्रतीक चिह्न दिया जाता है।

तीन अप्रवासी भारतीय सम्मानित

ब्रिटेन में हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने के लिए तीन अप्रवासी भारतीयों और नॉटिंघम की एक संस्था को भारतीय उच्चायोग ने सम्मानित किया है।

विश्व हिन्दी दिवस 2013 के अवसर पर भारतीय उच्चायुक्त जैमिनी भगवती ने सम्मानित जनों को स्मृति चिह्न, शॉल और प्रशस्ति पत्र भेंट किए। 'जॉन गिलक्रिस्ट यू०के० हिन्दी शिक्षण सम्मान' से हिन्दी भाषा के विकास में योगदान देने वाले यॉर्क यूनिवर्सिटी के महेन्द्र किशोर वर्मा को, 'डॉ० हरिवंश राय बच्चन यू०के० हिन्दी साहित्य सम्मान' से गीतांजलि मल्टीलिंगवल लिट्ररी सर्किल बर्मिंघम के अध्यक्ष डॉ० कृष्ण कुमार को, विश्वविख्यात लेखिका व ब्लॉगर कविता वाचवनवी और नॉटिंघम स्थित कवियों और लेखकों की वैश्विक संस्था 'काव्य रंग' को सम्मानित किया गया।

यश भारती सम्मान

संगीत, साहित्य, कला, रंगकर्म और खेल के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर उत्तर प्रदेश का नाम रोशन करने वाली 15 शख्सियतों को मुख्यमंत्री अखिलेश यादव और समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मुलायम सिंह यादव ने यश भारती सम्मान से सम्मानित किया।

डॉ० राम मनोहर लोहिया की 103वीं जयन्ती के अवसर पर आयोजित सम्मान समारोह में प्रख्यात शास्त्रीय गायक पण्डित छन्नूलाल मिश्र, समाजशास्त्री प्रो० सत्यमित्र दुबे, मशहूर शायर वसीम बरेलवी, पुरातत्वविद् डॉ० रामकृष्ण राजपूत, रंगकर्मी आमिर रजा हुसैन, कवियत्री डॉ० सरिता शर्मा, हॉकी खिलाड़ी विवेक गुप्ता और कुश्ती में नाम कमाने वाले मेवालाल यादव, नरसिंह यादव व अंशू तोमर को यश भारती सम्मान से अलंकृत किया गया। यश भारती के लिए चयनित प्रसिद्ध साहित्यकार राजेन्द्र यादव व मस्तराम कपूर, पार्श्व गायक अभिजीत भट्टाचार्य व जावेद अली और क्रिकेटर सुरेश रैना के प्रतिनिधियों ने उनकी अनुपस्थिति में पुरस्कार ग्रहण किये। सम्मानित हस्तियों को पुरस्कार स्वरूप 11 लाख रुपये का चेक, अंगवस्त्र और प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री व मुलायम सिंह यादव ने 'डॉ० लोहिया' और 'मानेंगे नहीं, मारेंगे नहीं' नामक दो पुस्तकों का विमोचन भी किया।

डॉ० काशीनाथ सम्मानित

सुप्रसिद्ध कथाकार डॉ० काशीनाथ सिंह को कोलकाता में आयोजित एक समारोह में भारतीय भाषा परिषद की ओर से वर्ष 2012-13 के 'रचना समग्र पुरस्कार' (लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड) से सम्मानित किया गया है। डॉ० सिंह को एक लाख रुपये और प्रशस्तिपत्र प्रदान किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बांग्ला के प्रसिद्ध कथाकार रामकुमार मुखोपाध्याय ने की। साथ ही असमिया के श्री लक्ष्मीनन्दन बोरा, तमिल के श्री अशोक मित्तल एवं पंजाबी के श्री मोहनजीत को भी परिषद के उपाध्यक्ष श्री विश्वम्भर दयाल सुरेका ने 'रचना समग्र पुरस्कार' से सम्मानित किया।

हिन्दी-उर्दू साहित्य अवार्ड

लखनऊ के उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी परिसर स्थित संत गाडगे प्रेक्षागृह में हिन्दी उर्दू साहित्य अवार्ड कमेटी के 24वें साहित्योत्सव के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए राज्यपाल ने हिन्दी उर्दू के साहित्य की सांझी विरासत को दूर-दूर तक लोकप्रिय करने वाले लेखकों, साहित्यकारों का सम्मान किए जाने की परम्परा का निर्वाह पिछले चौबीस वर्षों से बगैर किसी बाधा के करने पर हिन्दी उर्दू साहित्य अवार्ड कमेटी की सराहना की। इस अवसर पर कमेटी के सचिव अतहर नबी ने बताया कि उनकी संस्था अगले साल अपना रजत जयंती समारोह मनाएगी और यह समारोह बाबू हरिवंश राय बच्चन को समर्पित होगा। इस अवसर पर लोकप्रिय युवा शायर हसन काजमी की ग़ज़लों के संकलन 'खूबसूरत हैं आँखें तेरी' और डॉ० शाहिदा सिद्दीकी की पुस्तक 'जिगर बिस्वानी-हवात और कारनामे' का विमोचन भी राज्यपाल ने किया।

राज्यपाल ने 'साहित्य शिरोमणि सम्मान' से हिन्दी फिल्मों के चर्चित गीतकार समीर, 'शहर में कर्फ्यू' जैसे चर्चित उपन्यास के लेखक विभूति नारायण राय, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष व वरिष्ठ कवि उदयप्रताप सिंह, लेखक डॉ० रंजीत साहा, अवकाशप्राप्त अधिकारी व लेखक आर०पी० शुक्ल को एवं 'उर्दू अदब एवार्ड' से हिन्दी फिल्मों के चर्चित पटकथा और संवाद लेखक कई लोकप्रिय नाटकों के रचनाकार जावेद सिद्दीकी, जे०ए०न०यू० के उर्दू विभागाध्यक्ष प्रो० नसीर अहमद खान, इरम एजुकेशनल सोसाएटी के अन्तर्गत शिक्षण संस्थाओं के संचालक डॉ० ख्वाजा यूनुस, अलीगढ़ विश्वविद्यालय की उर्दू शिक्षिका डॉ० सीमा सगीर, मुम्बई के डॉ० शेख अब्दुल्लाह, डॉ० इक्तेदार फारूकी को, 'साहित्य श्री सम्मान' से नेपाल के तुलसी दिवस, जापान की टोमेको टोकिची, मृणालिनी पाटिल को सम्मानित किया गया।

श्री हरिराम मीणा को 'बिहारी पुरस्कार'

के०के० बिरला फाउंडेशन का वर्ष 2012 का बिहारी पुरस्कार हरिराम मीणा को उनके उपन्यास 'धूणी तपे तीर' के लिए दिया जाएगा। यह 22वाँ 'बिहारी पुरस्कार' है। इस पुरस्कार के अन्तर्गत एक लाख रुपये नकद, एक प्रतीक चिह्न तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है। मीणा के इस उपन्यास का प्रकाशन 2008 में हुआ था।

डॉ० कमला शंकर को कुमार गंधर्व सम्मान

गिटार वादन के क्षेत्र में सिद्धहस्त कलाकार डॉ०कमला शंकर को मध्य प्रदेश संस्कृति विभाग की ओर से 2009-10 का राष्ट्रीय कुमार गंधर्व सम्मान दिया गया है। यह पुरस्कार शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में गायन-वादन के लिए युवा कलाकारों को दिया जाता है।

संस्कृत के विद्वान किए गए सम्मानित

वाराणसी स्थित जंगमबाड़ी मठ में संस्थापक जगद्गुरु विश्वाराध्य की जयंती के अवसर पर पीठाधीश्वर डॉ० चन्द्रशेखर शिवाचार्य महास्वामी ने विद्वत सभा में संस्कृत के चार देशी विदेशी विशिष्ट विद्वानों को सम्मानित किया।

यूक्रेन की यूलिया (गौरी) को जगद्गुरु विश्वाराध्य विश्वभारती पुरस्कार (25 हजार रुपये नकद) दिया गया। उनकी पुस्तक 'श्रीसिद्धांत शिखामणि' के रूसी अनुवाद का कोडिमठ कर्नाटक के शिवानंद शिवयोगी राजेन्द्र स्वामी ने विमोचन भी किया। संस्कृत विश्वविद्यालय के दर्शन संकायाध्यक्ष प्रो० जयप्रकाश नारायण त्रिपाठी को श्री कोडीमठ संस्कृत साहित्य पुरस्कार (11 हजार) और काशी विद्यापीठ के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो० प्रभुनाथ द्विवेदी को आचार्य ब्रज वल्लभ द्विवेदी शैवभारती पुरस्कार (11 हजार) से सम्मानित किया गया। इसके अलावा स्लावा त्रिपुनोवा को साहित्य धुरंधर सम्मान प्रदान किया गया।

प्रो० मारुति नन्दन तिवारी सम्मानित

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कला इतिहास एवं पर्यटन प्रबंधन विभाग के प्रो० मारुति नन्दन प्रसाद तिवारी को नई दिल्ली में आयोजित समारोह में आचार्य हेमचन्द्र सूरी सम्मान प्रदान किया गया। इण्डिया इण्टरनेशनल सेन्टर में विगत दिनों यशवंत

एजुकेशनल प्रमोशन ट्रस्ट की ओर से आयोजित समारोह में एक लाख रुपये, स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र दिया गया। सम्मान समारोह की अध्यक्षता प्रतिष्ठित साहित्यकार प्रो० नामवर सिंह ने की।

राज चेत्ती को 'बेबी नोबेल' मेडल

भारतीय मूल के युवा अमेरिकी अर्थशास्त्री राज चेत्ती को 'बेबी नोबेल' के नाम से प्रसिद्ध 'जॉन बैट्स क्लार्क मेडल' से सम्मानित किया गया है। दिल्ली में पैदा हुए राज वर्ष 2009 से हावर्ड विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग में बतौर प्रोफेसर अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

डॉ० रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान

विगत दिनों आजमगढ़ में आयोजित इतिहास और आलोचना विषयक गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रसिद्ध हिन्दी आलोचक प्रो० नामवर सिंह ने कहा कि जाने-माने साहित्यकार रामविलास शर्मा ने श्रम व साधना से आलोचना की जो परम्परा स्थापित की, अनुकरणीय है। उन्होंने प्रो० प्रदीप सक्सेना को वर्ष 2012 का डॉ० रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान प्रदान किया।

तेलुगू लेखक श्री रावुरी भारद्वाज को 48वाँ 'ज्ञानपीठ पुरस्कार'

देश का सर्वोच्च साहित्य सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार वर्ष 2012 के लिए वरिष्ठ तेलुगू लेखक डॉ० रावुरी भारद्वाज को दिया जाएगा। उन्हें पुरस्कार के रूप में 11 लाख रुपए की राशि प्रदान की जाएगी।

तत्कालीन हैदराबाद स्टेट के मोगलुरू गाँव में 1927 में जन्मे डॉ० भारद्वाज के अभी तक तेलुगू में 37 लघुकथा संग्रह, 17 उपन्यास, तीन निबन्ध संग्रह और 8 नाटक प्रकाशित हो चुके हैं। उनके अधिकांश रचनाकर्म का प्रमुख भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में अनुवाद हो चुका है। श्री भारद्वाज को साहित्य अकादमी, सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार आदि कई सम्मानित पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। औपचारिक तौर पर मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण रावुरी भारद्वाज को तीन-तीन विश्वविद्यालयों ने 'डॉक्टरेट' की उपाधि प्रदान की है।

प्रतिष्ठित 'पद्म' सम्मान

राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'पद्म' प्रदान कर विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत देश के 54 व्यक्तित्वों को प्रतिष्ठा प्रदान की। राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में शिक्षा के क्षेत्र में प्रो० यशपाल, चित्रकार सैय्यद हैदर रजा, वैज्ञानिक रोदन नरसिम्हा, शिल्पकार सीताकांत महापात्र को 'पद्मविभूषण' से एवं फिल्म निर्माता डी० रामा नायडू, अभिनेत्री शर्मिला टैगोर, क्रिकेटर राहुल द्रविड़, अभिनेता राजेश खन्ना एवं व्यंग्यकार जसपाल भट्टी (दोनों को मरणोपरान्त), हेमेन्द्र सिंह पँवार, शिवाजी राव, गिरधर पाटिल, कनक यतीन्द्र रेले, प्रो० अशोक सेन, प्रो० गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक, राममूर्ति त्यागराजन आदि कुछ 24 विभूतियों को 'पद्मभूषण' और अभिनेत्री श्रीदेवी, अभिनेता नाना पाटेकर, अवनिता अब्बी, सुदर्शन कुमार अग्रवाल, गजम अंजैया, मोहम्मद शरफे आलम, राजेन्द्र अच्युत बडवे, जीसीडी भारती, मेमेन्द्र प्रसाद बरुआ, रविन्द्र सिंह बिष्ट, अविनाश चंदर, ताराप्रसाद दास, त्रिचुर विश्वनाथन देवराजन, संजय गोविन्द धांडे, नोबोरू करशिमा (जापान), एस० लक्ष्मीनारायण बापू, बंदना लूथरा, पी० माधवन नायर, सरोज चूड़ामणि गोपाल (वाराणसी), प्रो० के०सी० चुनेकर (वाराणसी) समेत लगभग 26 विभूतियों को 'पद्मश्री' सम्मान प्रदान किये।

राष्ट्रमंडल साहित्य पुरस्कार में जीत तायिल

बुकर पुरस्कार के लिए नामांकित और साहित्य अकादमी तथा डी०एस०सी० दक्षिण एशिया साहित्य पुरस्कार जीतने वाले जीत तायिल वर्ष 2013 के राष्ट्रमंडल पुस्तक एवं लघु कथा पुरस्कारों के लिए चुने गए भारतीय लेखकों में शामिल हैं। तायिल देश के उन छह भारतीय लेखकों में शामिल हैं जिन्हें पुरस्कार के लिए अन्तिम सूची में जगह मिली है।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के साहित्य-सम्मान

तीन वर्ष के अंतराल के बाद उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का लखनऊ स्थित यशपाल सभागार साहित्यकारों की उपस्थिति एवं सम्मान का साक्षी बना। यहाँ आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने वर्ष 2009 के लिए डॉ० महीप सिंह, वर्ष 2010 के लिए डॉ० कैलाश वाजपेयी (अनुपस्थित) एवं वर्ष 2011 के लिए गोविन्द मिश्र को संस्थान के सर्वोच्च सम्मान 'भारत भारती' (राशि दो लाख 51 हजार) से सम्मानित किया। तत्पश्चात् 'महात्मा गाँधी साहित्य सम्मान' (राशि दो लाख) से वर्ष 2009 के लिए डॉ० कमलकिशोर गोयनका, वर्ष 2010 के लिए मैत्रेयी पुष्पा तथा वर्ष 2011 के लिए नासिरा शर्मा को सम्मानित किया। इसी क्रम में 'हिन्दी गौरव' (राशि दो लाख रुपये) पुरस्कार डॉ० सरला शुक्ला, के०पी० सक्सेना और पं० श्री कृष्ण तिवारी को प्रदान किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि साहित्यकारों को सम्मानित करते हुए वे खुद सम्मानित हो रहे हैं। पिछली सरकार ने सम्मान एवं पुरस्कारों पर रोक लगा रखी थी जिसे फिर से शुरू किया जा रहा है। अबसे सभी 108 पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे जिनकी राशि दोगुनी होगी।

पं० हरिराम को साहित्य अकादमी पुरस्कार

भोजपुरी भाषा और साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए कवि पं० हरिराम द्विवेदी (हरि भइया) को साहित्य अकादमी के भाषा पुरस्कार के लिए चुना गया है। संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था साहित्य अकादमी के सचिव डॉ० के श्रीनिवास राव के अनुसार सम्मान स्वरूप श्री द्विवेदी को एक लाख रुपये नकद तथा सम्मान पत्र प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार देने की तारीख अभी तय नहीं हुई है।

सोन चिरैया लोककला सम्मान

विगत दिनों हिन्दी के प्रख्यात साहित्यकार, लोक साहित्य मर्मज्ञ डॉ० अर्जुनदास केसरी, सूर्यप्रसाद दीक्षित तथा अयोध्या प्रसाद गुप्त कुमुद को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री बी०एल० जोशी ने ग्यारह-ग्यारह हजार रुपये की राशि तथा स्मृति चिह्न प्रदान कर 'सोन चिरैया लोककला सम्मान' से सम्मानित किया। यह सम्मान 'सोन चिरैया' संस्था द्वारा आयोजित उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के प्रांगण में एक अत्यन्त भव्य समारोह में प्रदान किया गया।

जयपुर में अमृत सम्मान समारोह

विगत दिनों राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने जयपुर में कहा कि प्रदेश की विभिन्न साहित्य अकादेमियां जयपुर लिटरेचर फेस्टीवल के स्तर पर कोई आयोजन करेंगी तो सरकार इसमें पूरा सहयोग करेगी। राजस्थान-साहित्य अकादेमी, उदयपुर के 'अमृत सम्मान समारोह-2013' के अवसर पर उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन से साहित्यकारों, लेखकों की पूरी बिरादरी को सम्मान एवं स्वाभिमान मिलेगा और नई प्रतिभाओं को उभरने के अवसर भी। इस अवसर पर 'साहित्य मनीषी सम्मान' मूर्धन्य साहित्यकार ताराप्रकाश जोशी (2.51 लाख रुपए) तथा 'जनार्दनराय नागर सम्मान' डॉ० सावित्री डागा (1.00 लाख रुपए) को प्रदान किया गया। वर्ष 2012-13 के 'अमृत सम्मान' मुश्ताक अहमद 'राकेश', सुरेश पंडित, विनोद शंकर दवे, प्रकाश परिमल, माधुरी शास्त्री, विद्या सागर आचार्य, ओंकार पारीक, श्याम आचार्य (स्व०) नरसिंह देव गुजराती, जसदेव सिंह, डॉ० महेन्द्र भाणावत तथा नन्दलाल परशरामाणी को दिया गया। सम्मानस्वरूप इक्कीस हजार रुपए की राशि प्रत्येक को प्रदान की गई।

हरि जोशी को व्यंग्यश्री सम्मान

हिन्दी व्यंग्य-विनोद के शीर्षस्थ रचनाकार पं० गोपालप्रसाद व्यास की जयंती पर दिया जाने वाला 'व्यंग्यश्री सम्मान-2013' वरिष्ठ व्यंग्यकार हरि जोशी को विगत दिनों आयोजित एक समारोह में प्रदान किया गया। वरिष्ठ पत्रकार राहुल देव, व्यंग्यकार यज्ञ शर्मा, डॉ० प्रेम जनमेजय, हिन्दी भवन के कोषाध्यक्ष हरीशंकर बर्मन, डॉ० गोविन्द व्यास एवं निधि गुप्ता ने क्रमशः प्रशस्ति पत्र, शॉल, पुष्पहार, वाग्देवी की प्रतिमा, रजत-श्रीफल और इक्यावन हजार रुपये की राशि देकर उन्हें सम्मान से विभूषित किया।

अमर्त्य सेन को फ्रांस का सर्वोच्च सम्मान

नोबेल पुरस्कार प्राप्त अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन को महानतम मानवतावादी और महान चिंतक बताते हुए फ्रांस के राष्ट्रपति फ्रांस्वा ओलांद ने अर्थशास्त्र और दर्शनशास्त्र में उनके योगदान के लिए अपने देश का सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया।

माधवराव सिंधिया स्मृति व्याख्यानमाला में व्याख्यान देने के बाद फ्रांसीसी राष्ट्रपति ने सेन को 'लीजन ऑफ ऑनर' से विभूषित किया। ओलांद ने सेन के योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

प्रो० सत्यव्रत साहित्य अकादमी के फैलो

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्कृत विद्वान प्रो० सत्यव्रत शास्त्री सर्वसम्मति से साहित्य अकादमी के फैलो चुन लिए गए हैं। साहित्य अकादमी के सचिव डॉ० श्रीनिवास राव ने इस बारे में जानकारी देते हुए बताया कि प्रो० सत्यव्रत शास्त्री को नई दिल्ली में आयोजित होने वाले एक विशेष कार्यक्रम में फैलो सम्मान प्रदान किया जाएगा। संस्कृत के किसी विद्वान् को पहली बार साहित्य अकादमी का सर्वसम्मति से फैलो चुना गया है।

'हरियाणा संस्कृत गौरव सम्मान'

विगत दिनों हरियाणा संस्कृत अकादमी की ओर से दिया जानेवाला 'हरियाणा संस्कृत गौरव सम्मान' डॉ० रामदत्त शर्मा को दिये जाने की घोषणा की गयी। यह अकादमी का सर्वोच्च सम्मान है। पुरस्कारस्वरूप उन्हें एक लाख पचास हजार रुपए की राशि, प्रशस्ति-पत्र, शॉल और प्रतीक-चिह्न भेंट किए जाएँगे।

'विशिष्ट साहित्यकार सम्मान'

राजस्थान साहित्य अकादमी इस वर्ष के 9 वरिष्ठ साहित्यकारों को 'विशिष्ट साहित्यकार सम्मान' से समादृत करेगी। सर्वश्री कुमार शिव, रणवीर सिंह, मदन केवलिया, सुदेश बत्रा, क्षमा चतुर्वेदी, मुरलीधर वैष्णव, भागीरथ, सुरेन्द्र चतुर्वेदी और सत्यनारायण व्यास को उनके हिन्दी साहित्य में उल्लेखनीय योगदान हेतु उक्त सम्मान के रूप में 50 हजार रुपए, प्रशस्ति-पत्र आदि भेंट किए जाएँगे।

कॉमनवेल्थ पुरस्कार की दौड़ में पांच भारतीय पुस्तकें शामिल

अंग्रेजी साहित्य के क्षेत्र में दिए जाने वाले प्रतिष्ठित कॉमनवेल्थ पुरस्कारों के लिए इस बार 21 उपन्यासों को मनोनीत किया गया है जिसमें पाँच समकालीन भारतीय उपन्यास भी शामिल हैं।

यह पुरस्कार कॉमनवेल्थ देशों के बीच दिया जाता है। पाँच क्षेत्रीय विजेताओं तथा एक विशेष विजेता की घोषणा 14 मई को लंदन में 'हे फेस्टिवल' के दौरान की जाएगी। पुरस्कार के रूप में विशेष विजेता को 10,000GBP नकद तथा क्षेत्रीय विजेताओं को 2,500 पाउण्ड दिया जाएगा।

खुशवंत सिंह 98वें जन्मदिन पर नई किताब

2 फरवरी, 1915 को हडाली (अब पंजाब प्रान्त, पाकिस्तान में) में जन्मे प्रख्यात लेखक खुशवंत सिंह अपने 98वें जन्मदिन (2013) पर एक नई किताब लेकर आए हैं, जिसमें उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन के दौरान मिले अनुभव, राजनीति, भारत के भविष्य और उनके लिए धर्म के मायने क्या हैं, इसके बारे में चर्चा की है। दिल्ली स्थित अपने निवास पर आयोजित एक निजी समारोह में खुशवंत सिंह ने अपनी नई किताब 'खुशवंतनामा : दी लेसंस ऑफ माई लाइफ' की पहली प्रति प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की पत्नी एवं अपनी मित्र श्रीमती गुरशरण कौर को भेंट की। खुशंवत ने इस किताब में विभिन्न विषयों पर अपने विचार रखे हैं।

पाठकों के पत्र

विगत दिनों 'भारतीय वाङ्मय' का अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। 'अपनी बोली अपनी बात' शीर्षक से लिखा गया सम्पादकीय कटु सत्य से रू-ब-रू करता हिन्दी की स्थिति पर एक विचारणीय बहस के लिए प्रेरित करता है।

'रावण रथी विरथ रघुवीरा' शीर्षक प्रो० राजेन्द्र मिश्र का लघु आलेख काफी तथ्यपूर्ण है। 'योग और आरोग्य' पढ़कर इस पुस्तक को पढ़ने की इच्छा हो गयी है। नये प्रकाशन एवं साहित्यिक जगत की नवीन जानकारियों से परिपूर्ण यह पत्रिका हमारे जैसे सुदूर पूर्वोत्तर में बैठे व्यक्तियों के लिए काफी ज्ञानवर्द्धक है।

—हरेराम पाठक, डिगबोई (असम)

स्मृति शेष

प्रोफेसर वीरभद्र मिश्र का निधन

भारतीय संस्कृति के सजग प्रहरी, विश्व विख्यात अखाड़ा गोस्वामी तुलसीदास व वाराणसी के विश्व प्रसिद्ध संकटमोचन मन्दिर के महंत और प्रख्यात पर्यावरणविद् प्रो० वीरभद्र मिश्र (75 वर्ष) का 13 मार्च 2013 को उपचार के दौरान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित सर सुन्दरलाल अस्पताल में निधन हो गया।

श्री मिश्र गंगा निर्मलीकरण के लिए संकल्पित संस्था संकटमोचन फाउंडेशन के अध्यक्ष भी थे। गंगा आन्दोलन के प्रणेता होने के नाते जन-जन उन्हें गंगापुत्र के नाम से पुकारता था।

गीतकार पं० श्रीकृष्ण तिवारी का निधन

प्रसिद्ध नवगीतकार पं० श्रीकृष्ण तिवारी का रविवार, 28 अप्रैल 2012 को निधन हो गया। वे 74 वर्ष के थे। श्री तिवारी का जन्म 8 अगस्त 1939 को वाराणसी के चेतगंज मुहल्ले में हुआ था। इन्हें विगत 22 मार्च को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'हिन्दी गौरव पुरस्कार' (2011 ई०) से सम्मानित किया गया था। आपको हिन्दी साहित्य संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण पुरस्कार' (2001 ई०) भी प्राप्त हुआ था। 'सन्नाटे की झील' उनका लोकप्रिय काव्य-संग्रह है। उनकी दो नयी पुस्तकों 'घर और घर' और 'नये दौर की नयी ऋचाएँ' के शीघ्र ही प्रकाशन की सम्भावना है।

नहीं रहीं भारत की 'मानव कम्प्यूटर' देवी

अपनी अद्भुत गणितीय क्षमता व ज्योतिष ज्ञान की बदौलत पूरी दुनिया में चर्चित भारतीय गणितज्ञ शकुंतला देवी का 21 अप्रैल की सुबह 83 वर्ष की उम्र में बेंगलूर में निधन हो गया। कुछ ही पलों में बड़ी से बड़ी संख्यात्मक गणना कर देने के विलक्षण गुण के कारण उन्हें 'ह्यूमन कम्प्यूटर' के नाम से जाना जाता था।

श्री नरेन्द्र प्रसाद जैन

मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स के प्रमुख श्री नरेन्द्र प्रसाद जैन का देहावसान 5 मार्च 2013 को हो गया। देश-विदेश के प्रकाशन जगत में उन्होंने भारतीय संस्कृति से संबद्ध लेखन को प्रतिष्ठा प्रदान की। उनकी स्मृति को नमन्।

गायिका पूर्णिमा का निधन

बनारस घराने की गायकी की एक मजबूत कड़ी टूट गई। उपशास्त्रीय गायकी की मजबूत हस्ताक्षर पूर्णिमा चौधरी का कोलकाता के एक अस्पताल में इलाज के दौरान विगत 4 मार्च 2013 को निधन हो गया। बनारस के रामापुरा घराने से जुड़ी पूर्णिमा चौधरी पं० महादेव मिश्रा की शिष्या थीं।

लेखक-चिंतक श्री मस्तराम कपूर नहीं रहे

विगत 2 अप्रैल को नई दिल्ली में वरिष्ठ समाजवादी चिंतक और हिन्दी के लेखक श्री मस्तराम कपूर का निधन हो गया। उनका जन्म 22 दिसम्बर, 1926 ई० को हिमाचल प्रदेश के काँगड़ा के सकड़ी गाँव में हुआ था। समाजवादी चिंतन के साथ ही कहानी, कविता, निबन्ध और बच्चों की कई पुस्तकों के लेखक श्री कपूर ने दो वर्ष पहले डॉ० राममनोहर लोहिया के साहित्य के अंग्रेजी और हिन्दी में नौ खण्डों के सम्पादन और संकलन का महत्त्वपूर्ण काम किया। कई पुरस्कार और सम्मान पानेवाले कपूर को अभी हाल में 'यश भारती' सम्मान मिला था। उन्होंने सरकारी सेवा से अवकाश के बाद 'समाजवादी साहित्य संस्थान' की स्थापना की थी।

`भारतीय वाङ्मय' परिवार अपनी अश्रुपूरित भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

संगोष्ठी/लोकार्पण

सर्वधर्म समभाव का कहीं नहीं होता पालन

सर्वधर्म समभाव महज एक मुहावरा है, इसका कहीं पालन नहीं होता। यदि कोई धर्म है तो वह मानव धर्म, शेष सम्प्रदाय है। यह विचार प्रख्यात आलोचक प्रो० नामवर सिंह के हैं। वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय कला संकाय में आयोजित प्रो० दीपक मलिक की पुस्तक 'गाँधी-नेहरू : भारतीय सर्वधर्म समभावी राष्ट्रवाद' के विमोचन व उस पर आयोजित परिचर्चा को सम्बोधित कर रहे थे। प्रश्न उठाया कि अगर सभी धर्म एक है तो इतने धर्म क्यों बने ? धर्म के नाम पर इतने संघर्ष क्यों होते हैं। राष्ट्र एक राजनीतिक अवधारणा है, इसके साथ हमें धर्म या सर्वधर्म जैसी शब्दावली का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इस अवसर पर प्रख्यात कथाकार काशीनाथ सिंह, प्रो० कुमार पंकज, प्रो० सदानन्द शाही आदि उपस्थित थे।

पांडुलिपियाँ राष्ट्रीय सम्पत्ति

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज में विगत दिनों पांडुलिपि व लिपिविज्ञान कार्यशाला का उद्घाटन हुआ। मुख्य अतिथि काशी विद्यापीठ के कुलपति डॉ० पी० नाग ने कहा कि दुर्लभ पांडुलिपियों को राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित करना चाहिए। विशिष्ट अतिथि भारत कला भवन के निदेशक प्रो० ए०के० सिंह थे। अध्यक्षता प्रो० आनन्द वर्द्धन ने की।

भारतीय संस्कृति के विकास में लाइब्रेरी का योगदान अहम

पूर्व मुख्य सूचना आयुक्त ओ०पी० केजरीवाल ने कहा कि पुस्तकालय का ध्वंस अंधकार युग का कारण बनता है। उन्होंने नालंदा पुस्तकालय का उदाहरण देते हुए कहा कि नालंदा के विनाश के बाद सभ्यता का अंधकार युग आ गया।

श्री केजरीवाल वाराणसी स्थित पार्श्वनाथ विद्यापीठ में साहित्य मनीषी पूज्य मुनि श्री ज्ञानसागर जी महाराज की दीक्षा जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित 'भारतीय संस्कृति के विकास में पुस्तकालयों का योगदान' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में अध्यक्ष पद से विचार व्यक्त कर रहे थे। कार्यक्रम में अनेकानेक विद्वान उपस्थित थे।

राहुलजी की 120 जयंती पर संगोष्ठी

वाराणसी। प्रसिद्ध आलोचक पंकज गौतम ने कहा कि राहुल का सम्पूर्ण साहित्य समाजवादी समाज की स्थापना का रचनात्मक संघर्ष है। ऐतिहासिक तथ्यों को रूप देने के लिए जहाँ उन्होंने कल्पनाशीलता का सहारा लिया वहाँ उनकी कल्पना निखर उठती है। इसके पीछे उनकी प्रगतिशील और जनवादी दृष्टिकोण की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

कार्यक्रम का आयोजन महापंडित राहुल सांकृत्यायन की 120वीं जयन्ती के अवसर पर महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र की ओर से किया गया था।

रामदरश मिश्र की काव्य उपस्थिति

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी भवन में हिन्दी साहित्य के बड़े हस्ताक्षर प्रख्यात कथाकार व कवि प्रो० रामदरश मिश्र ने व्याख्यान दिया व अपनी कविता से सभी को मुग्ध भी कर दिया। कहा कि साहित्यकार समाज के आईने को साफ करते हुए यथार्थ से जोड़ने का सफल प्रयास करता है। प्रो० मिश्र ने अपनी पुरानी यादों को भी विद्यार्थियों के बीच साझा किया। स्वागत प्रो० वशिष्ठ अनूप व धन्यवाद प्रो० बलिराज पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर सैकड़ों की संख्या में विद्यार्थी व प्राध्यापक उपस्थित थे।

सेतु नाट्य-आन्दोलन

सेतु सांस्कृतिक केन्द्र, वाराणसी द्वारा पिछले 13 वर्षों से चलाये जा रहे नाट्य-आन्दोलन के क्रम में इस वर्ष भी 3 अप्रैल हिन्दी रंगमंच दिवस से आरम्भ 11 दिवसीय सनबीम नाट्य-आन्दोलन का आगाज़ किया गया। सेतु-सचिव एवं कार्यक्रम संयोजक श्री सलीम राजा के परिश्रम एवं अध्यवसाय से विभिन्न कार्यक्रमों—नाट्य-परिचर्चाओं, नाट्य-छायाचित्र प्रदर्शनी और नाट्य-प्रदर्शनों में नगर के बुद्धिजीवियों, संस्कृति कर्मियों, शिक्षाविदों, रंगकर्मियों ने अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। इस कार्यक्रम में नगर के संस्कृति-कर्मियों के साथ रायपुर से इप्टा के मिनहाज असद, जयपुर से हेमचंद तम्हंकर, जमशेदपुर से मोहम्मद निजाम, जम्मू से लकी गुप्ता जैसे अतिथि नाट्य-कर्मियों ने भी भाग लिया। इसी क्रम में समायोजित नाट्य-प्रस्तुतियों में जम्मू के कलाकार लकी गुप्ता का 'माँ मुझे टैगोर बना दे' प्रेरणा कलामंच (वाराणसी) की 'गंगा हो गांगी', मंथन (वाराणसी) द्वारा 'युगांत' और 'तोता बोला' एवं चेन्नई से आई विभा रानी द्वारा 'बिम्ब-प्रतिबिम्ब' एवं 'आओ तनिक प्रेम करें' जम्मू कश्मीर के थियेटर ग्रुप द्वारा 'आखिर क्यों', उड़ीसा के मिरर-थियेटर का 'आज़ादी' और बाल रंगमंडल (वाराणसी) द्वारा 'बॉबी की कहानी', 'मगर और बंदर', इलाहाबाद के माध्यम द्वारा 'अफीम के फूल' जैसे बाल-नाटकों का मंचन किया गया। नाट्य-आन्दोलन के आरम्भ क्रम में वाराणसी के वरिष्ठ कलाकार श्री एम०एन० गुर्जर को 'लाइफ टाइम एचीवमेंट' सम्मान प्रदान किया गया एवं समापन-क्रम में वरिष्ठ नाट्यकर्मी श्री नीलकमल चटर्जी के 81वें जन्मदिन को नाट्य-दर्शकों के साथ साझा करते हुए समग्र कार्यक्रम को सुखद-परिणति प्रदान की गयी। समग्र कार्यक्रम का संचालन सुश्री प्रतिमा सिन्हा ने किया।

आलोचना का जनपक्ष और चन्द्रबली सिंह

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय कला संकाय में विगत दिनों प्रख्यात समालोचक प्रो० नामवर सिंह ने 'आलोचना का जनपक्ष और चन्द्रबली सिंह' विषयक व्याख्यान में अपने खास अंदाज में चन्द्रबली सिंह की स्मृतियों को संजोया तो वर्तमान लेखन पर कटाक्ष भी किया।

प्रो० नामवर सिंह ने कहा कि चन्द्रबली सिंह जनवादी लेखक संघ (जलेस) के संस्थापक और मार्गदर्शक थे लेकिन उनको सिर्फ जलेस तक सीमित कर देना, उनकी प्रतिभा को सीमित करने के समान है। चन्द्रबली सिंह की दृष्टि मुख्यत: कविता में थी। उनके अधिकांश लेख कवियों पर ही केन्द्रित हैं। यही कारण है कि उन्होंने पाब्लो नेरूदा, एमिली डिकिन्सन समेत कई विदेशी कवियों के कार्यों का अनुवाद किया। विचारों के धरातल पर उन्होंने कभी किसी से समझौता नहीं किया।

चन्द्रबली सिंह के बहाने वर्तमान लेखन पर कटाक्ष करते हुए नामवर सिंह ने कहा कि वर्तमान में भाषा सरलता के नाम पर बाजारू होती जा रही है। व्यंग्य में अब फूहड़पन दिखने लगा है। आलोचना का स्तर लगाता गिरता जा रहा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कला संकाय प्रमुख प्रो० महेन्द्रनाथ राय ने की। स्वागत हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० बलिराज पाण्डेय ने किया। संचालन प्रो० अवधेश प्रधान तथा धन्यवाद ज्ञापन चन्द्रबली सिंह स्मृति न्यास के सचिव प्रबल कुमार सिंह ने किया। समारोह में कथाकार डॉ०काशीनाथ सिंह, डॉ० गया सिंह, प्रो०चम्पा सिंह, डॉ० वशिष्ठ अनूप, डॉ० श्रद्धा सिंह आदि उपस्थित थे।

बसन्त व्याख्यानमाला एवं अलंकरण समारोह

देश के प्रख्यात पत्रकार एवं चिंतक डॉ० वेदप्रताप वैदिक ने कहा कि इस समय देश में जो भी हालात हैं, वे देश को बर्बादी की ओर ले जा रहे हैं। इस बर्बादी से देश को बचाने के लिए सारे गैर राजनीतिक संगठनों को एक जुट होकर काम करना होगा। डॉ० वैदिक मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और पं० रविशंकर शुक्ल हिन्दी भवन न्यास की ग्यारहवीं बसन्त व्याख्यानमाला में देश की युवा पीढ़ी में पनपती संस्कार और संस्कृति विमुखता पर केन्द्रित विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित कर रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एवं सांसद श्री कैलाश जोशी ने की, जबकि मुख्य अतिथि थे—शिक्षाविद डॉ० जे०एस० राजपूत। दूसरे मुख्य वक्ता के रूप में कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलपति डॉ० सच्चिदानन्द जोशी ने भी व्याख्यानमाला में वैचारिक भागीदारी की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ० राजपूत ने वर्ष 2012 के ''श्री वीरेन्द्र तिवारी स्मृति रचनात्मक सम्मान'' से प्रख्यात सर्वोदयी कार्यकर्ता डॉ० सुगनचंद्र कानमल बरंठ

(महाराष्ट्र) को तथा ''श्री शैलेश मटियानी स्मृति चित्रा कुमार कथा पुरस्कार'' से कथाकार डॉ० शैलेय (उत्तराखण्ड) को अलंकृत किया दोनों को पुरस्कार राशि (क्रमशः 21 हजार रु० एवं 11 हजार रु०) प्रदान किये गये।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की 150वीं जयन्ती पर आयोजन

हिन्दी साहित्य को मानक रूप देने वाले महान साहित्यकार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर देश भर में 150 कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी राष्ट्रीय स्मारक समिति के मिलिंद द्विवेदी ने बताया कि नौ मई से शुरू होने वाले आयोजन वर्षपर्यन्त चलेंगे। द्विवेदी ने बताया कि हिन्दी साहित्य में 1903 से 1921 ई० के समय को द्विवेदी युग के तौर पर जाना जाता है। आचार्य द्विवेदी ने अलग-अलग बोली, वाणी में बंटी हिन्दी को एक रूप देने का महान कार्य किया था। इसे देश भर में होने वाले साहित्यिक आयोजनों में स्मरण किया जायेगा। इसके अन्तर्गत गोष्ठी, कृतित्व पर चर्चा और स्मृति पर्व के आयोजन किए जाएँगे। स्मारक समिति आचार्य द्विवेदी के जयन्ती वर्ष को भव्यता के साथ मनाने का उपक्रम कर रही है।

काव्योत्सव

'काव्योत्सव' में साहित्य अकादमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने नई रचना सुनाई। 'खड़े-खड़े मेरे पाँव दुखने लगे थे। थोड़ी सी जगह चाहता था बैठने के लिए....सुई की नोकभर जगह के लिए हुआ था महासमर।' प्रख्यात आलोचक अशोक वाजपेयी ने अपने पिता के लिए लिखी कविता 'काका' का पाठ किया। उदयन वाजपेयी ने अपने संग्रह 'पागल गणितज्ञ की कल्पनाएँ' से रचना सुनाई। कमलेश ने 'माँ' पर रचित पंक्तियाँ सुनाईं। नरेन्द्र नीरव ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

भोजपुरी साहित्य की धरोहर

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भोजपुरी अध्ययन केन्द्र में विगत दिनों भोजपुरी के कवि रामनवल मिश्र का सम्मान किया गया। भोजपुरी जनपद के सम्पादक प्रो० अवधेश प्रधान ने माल्यार्पण कर उत्तरीय समर्पित किया। उन्होंने कहा कि रामनवल मिश्र की कविताएँ बैठकर नहीं लिखी गई हैं बल्कि ये गाँव की यात्रा कर रची गयी हैं। श्री मिश्र की कविताएँ भोजपुरी साहित्य की धरोहर हैं।

रामनवल मिश्र ने अपनी कई कविताओं का पाठ भी किया। प्रो० सदानंद शाही ने कहा कि रामनवल मिश्र की कविताएँ मानव जीवन की वास्तविकता की प्रस्तुति हैं जिनमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालमुकुन्द गुप्त व नागार्जुन तक की परम्पराएँ भी मौजूद हैं।

विश्वविद्यालयों में साहित्य सर्जकों की तलाश

हिन्दी साहित्य के रचनाकारों की नई पौध की खोज की जा रही है। देश के विश्वविद्यालयों में उनकी तलाश की पहल साहित्यिक पत्रिका संवेद ने शुरू की है। 'सृजनात्मकता की नई पौध' विशेषांक के रूप में देश के विश्वविद्यालयों के युवा रचना-कर्मियों पर केन्द्रित अंक जारी किया जा रहा है।

पहला अंक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पर केन्द्रित है। पत्रिका के फरवरी अंक का सम्पादन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के शोध छात्र रविशंकर उपाध्याय ने किया है। अगला अंक हैदराबाद विश्वविद्यालय पर केन्द्रित होगा। इसके बाद शान्ति निकेतन, जामिया मिलिया इस्लामिया, जे०एन०यू०, दिल्ली विश्वविद्यालय पर केन्द्रित अंक निकालने की तैयारी है। संवेद के सम्पादक किशन कालजयी ने बताया कि हमारी कोशिश विश्वविद्यालयों में युवा लेखन की बानगी पेश करने की है।

भाऊराव देवरस सेवा सम्मान समारोह

स्वामी विवेकानन्द सार्द्ध शती को समर्पित भाऊराव देवरस स्मृति अष्टदस सेवा सम्मान समारोह 2012-13, सरस्वती शिशु मन्दिर, नेहरू नगर, गाजियाबाद में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एयरमार्शल डॉ० रमेश चन्द्र बाजपेयी (सेवानिवृत्त) ने की। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानन्द ब्रह्मचारी, तथा मुख्य वक्ता मा० दत्तात्रेय होसबाले सहसरकार्यवाह (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) थे। भाऊराव जी की स्मृति में न्यास द्वारा प्रतिवर्ष देश के किन्हीं दो ऐसे व्यक्तियों को सम्मानित किया जाता है जिन्होंने समाज हित में राष्ट्रीय सेवा का कार्य किया हो। इस वर्ष श्री रबिराम ब्रह्मा, अध्यक्ष पूर्वोत्तर जनजाति शिक्षा समिति (एकल विद्यालय अभियान-असम) तथा श्री लामानवांग पालजोर, जिन्होंने कारगिल, लेह-लद्दाख क्षेत्र में शिक्षा एवं सामाजिक क्षेत्र में सेवा कार्य, कारगिल युद्ध के समय भारत-तिब्बत सहयोग मंच के साथ कार्य किया, को 51000/- (इक्यावन हजार मात्र) की राशि का चेक, प्रतीक चिह्न एवं अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित किया गया।

उपन्यास की जमीन

विगत दिनों संकटमोचन नगर, आरा के 'सृजन लोक' कार्यालय में 'उपन्यास की जमीन' नामक पुस्तक का लोकार्पण कथाकार एवं साहित्यिक पत्रिका 'जनपथ' के संपादक अनन्त कुमार सिंह ने एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक आयोजन में किया। 'उपन्यास की जमीन' प्रसिद्ध कथाकार मिथिलेश्वर के उपन्यासों पर एक गम्भीर आलोचना पुस्तक है, जिसमें देश के प्रख्यात आलोचकों एवं विचारकों—डॉ० मैनेजर पाण्डेय, डॉ० शिवकुमार मिश्र, प्रभा खेतान, विनोद शाही, डॉ० विजेन्द्र नारायण सिंह, डॉ० खगेन्द्र ठाकुर, डॉ० कुँवरपाल सिंह, डॉ० रमेश दवे, भीष्म साहनी, डॉ० ब्रजकुमार पाण्डेय, रामधारी सिंह दिवाकर आदि के समीक्षात्मक लेख सम्मिलित हैं। लोकार्पण के साथ विचारगोष्ठी भी आयोजित की गयी।

'मेरा मुझ में कुछ नहीं' का लोकार्पण

नयी दिल्ली के गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान के सभागार में सुप्रसिद्ध साहित्यकार रमेश उपाध्याय की आत्मकथात्मक एवं साहित्यिक विमर्शों की नयी पुस्तक 'मेरा मुझ में कुछ नहीं' का लोकार्पण वरिष्ठ आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी ने किया।

लोकार्पित पुस्तक के विमर्श में प्रसिद्ध आलोचक डॉ० मैनेजर पाण्डेय, कवि लीलाधर मंडलोई, अल्पना मिश्र, राकेश कुमार, प्रेम जनमेजय एवं देवेन्द्र में मेवाड़ी ने विचार व्यक्त किये।

डॉ० रामविलास शर्मा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

पिछले दिनों हिन्दी-विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के संयुक्त तत्त्वावधान में 'डॉ० रामविलास शर्मा की हिन्दी साहित्य को देन', विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में किया गया।

संगोष्ठी की अध्यक्षता कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति ले० जनरल डॉ० डी०डी०एस० सन्धू ने की। उन्होंने कहा हिन्दी गौरव की भाषा है। इसे भारतीय भाषाओं के साथ मिलकर साहित्य, संस्कृति और सभ्यता का प्रचार-प्रसार करके तकनीकी क्षेत्रों में आगे बढ़ना चाहिये। डॉ० रामविलास शर्मा जैसे साहित्यकार से प्रेरणा लेनी चाहिये कि वे अंग्रेजी के प्रोफेसर थे परन्तु जीवन भर हिन्दी का प्रचार-प्रसार किया। हिन्दी-विभाग के प्रोफेसर बाबू राम ने विषय का प्रवर्तन किया एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रोफेसर मोहन ने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया। मुख्य वक्ता डॉ० बी०के० सिंह, पूर्व कुलपति, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर ने रामविलास शर्मा को बड़े खुले दिल का साहित्यकार बताया और उनके जीवन तथा साहित्य से जुड़े अनेक मार्मिक प्रसंगों पर विस्तार से प्रकाश डाला। संगोष्ठी के दूसरे सत्र की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय, हिन्दी-विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर रमेश गौतम ने की। हिन्दी विभाग की अध्यक्ष सरिता वाशिष्ठ ने गणमान्य अतिथियों को स्मृति-चिह्न प्रदान किये।

'समकालीन स्पंदन' पत्रिका लोकार्पित

वाराणसी में ख्यातिलब्ध गीतकार पं० हरिराम द्विवेदी की अध्यक्षता में काव्य केन्द्रित त्रैमासिक पत्रिका 'समकालीन स्पंदन' के प्रवेशांक का लोकार्पण सर्वश्री राजीव अरोड़ा, जितेन्द्र नाथ मिश्र, श्रीकृष्ण तिवारी आदि विद्वानों ने संयुक्त रूप से किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ की पावन भूमि शान्तिनिकेतन में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ और भारतीय लोक साहित्य पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भाषा भवन (विश्वभारती), आई०सी०एस०एस० (नई दिल्ली) तथा सी०आई०आई०एल० (मैसूर) द्वारा किया गया। विषय से अवगत कराया प्रो० हरिश्चंद्र मिश्र ने, सम्बोधन डॉ० शिवराम कृष्ण ने तथा बीज भाषण प्रो० बी०एन० दत्ता ने किया। इस अवसर पर प्रो० हरिश्चंद्र मिश्र की दो पुस्तकों 'भोजपुरी-उड़िया लोकोक्ति' तथा 'रवीन्द्रनाथ का लोक साहित्य' (अनुवाद) का विमोचन हुआ। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो० एंबलिक हरिथन्न थे। डॉ० विद्या बिन्दु सिंह ने 'लोक साहित्य : जीवन का वसंत' सत्र की अध्यक्षता की। 'लोक साहित्य : मिट्टी की सुगन्ध' सत्र की अध्यक्षता श्री हेतु भारद्वाज ने की।

महिला दिवस पर

आकाशवाणी दिल्ली की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर बंग संस्कृति भवन में 'संचार माध्यमों में महिला की छवि' विषय पर एक विचार-गोष्ठी में सर्वश्री चित्रा मुद्गल, पुष्पेष पंत, राहुल देव तथा अरुण ब्रूटा ने अपने विचार रखे। उसके बाद संगीत संध्या का भी आयोजन किया गया।

'शब्दों का त्योहार' कार्यक्रम सम्पन्न

हाल ही में काव्यरंग संस्था ने नॉटिंघम की एशियन आर्ट्स काउंसिल के साथ मिलकर ट्रेंड यूनिवर्सिटी में एक अनूठे कार्यक्रम का आयोजन किया—शब्दों का त्योहार। पहले सत्र में कुछ पुस्तकों का लोकार्पण किया गया—सर्वश्री संतोख सिंह ढालीवाल (*ते कौण मर गया* : पंजाबी), चंचल सिंह बब्बक (*जिन्दगी दियां पैरां* : पंजाबी), फरजाना अख्तर (*दर्द की नीली रगें* : उर्दू), असी कश्मीरी (*उर्दू नज्में* : उर्दू), अहमद मसूद (*रौशनी है* : उर्दू), सादिया सेठी (*कभी नाराज मत होना* : उर्दू), जय वर्मा (*ई-बुक सहयात्री हैं हम* : हिन्दी), नीला पॉल (*तलाश* : हिन्दी), पुष्पा राव (*जिन्दगी की शाम* : हिन्दी), शिवेन्द्र सिन्हा (*बेसिक्स ऑफ हिन्दुइज्म* : अंग्रेजी), रूपम कैरल (*बच्चों की कहानियाँ - सैमी दि स्नेल* : अंग्रेजी), हरमिन्दर एस० नेगी (*कलेक्शन ऑफ पोयज्म - विश आई हैड अ मैजिक कार्पेट* : अंग्रेजी), चंद्रिका सेठ (*यात्रा वृत्तांत - विश्व के आश्चर्यजनक देश* : गुजराती)। लोकार्पण श्री वी०एस० रामलिंगम द्वारा किया गया। संचालन 'काव्यरंग' की अध्यक्षा श्रीमती जय वर्मा ने किया। मुख्य अतिथि श्री रामलिंगम, विशिष्ट अतिथि श्री बिनोद कुमार, श्री नाथ पुरी एवं श्री तेजेन्द्र शर्मा ने अपने विचार रखे। दूसरे सत्र में विभिन्न भाषाओं के कवियों ने अपनी कविताएँ सुनाईं।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी भाषा संकल्प समारोह

कानपुर में उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन एवं उत्कर्ष अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी भाषा संकल्प समारोह का द्विदिवसीय आयोजन सम्पन्न हुआ। समारोह में पूर्व सांसद डॉ० रत्नाकर पाण्डेय व हिन्दी विद्वान् डॉ० वेदप्रकाश 'बटुक' एवं मुख्य अतिथि उद्यानमंत्री डॉ० शिवप्रताप सिंह थे। डॉ० दाऊजी गुप्त प्रमुख अतिथि एवं डॉ० बद्रीनारायण तिवारी वरेण्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह में देश-विदेश से आए हिन्दी विद्वानों व साहित्यकारों का स्वागत उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ० प्रदीप दीक्षित द्वारा किया गया। श्री अनिल दीक्षित की काव्य पुस्तक 'इसलिए कहता हूँ' एवं उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्मारिका 'वैश्विक हिन्दी' सहित डॉ० के०के० दीक्षित की सी०डी० पुस्तक का लोकार्पण किया गया। 'डॉ० सुरेशचन्द्र शुक्ल अन्तर्राष्ट्रीय काव्य सम्मान 2013' कवि डॉ० सुरेश अवस्थी को प्रदान किया गया। 'उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन उत्कर्ष कथा अलंकरण 2013' फीचर सम्पादक सुश्री आकांक्षा पारे काशिव, 'उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन उत्कर्ष काव्य अलंकरण 2013' गजलकर श्री पवन कुमार सिंह तथा 'उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन उत्कर्ष पत्रकारिता अलंकरण 2013' श्री अंशुमान तिवारी को सम्मान पत्र व उत्तरीय देकर किया गया। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध साहित्यकार गिरिराज किशोर, डॉ० माहे तिलत सिद्दीकी, डॉ० राजेन्द्र मिलन, डॉ० योगेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ० रुचि चतुर्वेदी, प्रो० शरद नारायण खरे आदि को सम्मानित किया गया। समारोह में विदेशों से आए हिन्दी विद्वानों में सर्वश्री कैरोलीन मारकैंड (फ्रांस), कैटी माटिन, फ्लोरेंस केंर्स, सबीना शेख, याह्या खान (ऑस्टिन टेक्सास, यू०एस०ए०), इब्राहिम कमल (शिकागो), ब्रौंडन बकनर (डेनबर, यू०एस०ए०) आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

विगत दिनों हैदराबाद में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा द्वारा संचालित उच्च शिक्षा और शोध संस्थान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन श्री जगदीश मित्तल द्वारा हुआ। अपने उद्बोधन में उन्होंने भवानी भाई और विष्णुजी से सम्बन्धित संस्मरण सुनाए। सभा के कुलसचिव प्रो० दिलीप सिंह ने कहा कि पं० भवानीप्रसाद मिश्र और विष्णुजी अपनी तरह से लिखनेवाले रचनाकार थे। विशिष्ट अतिथि डॉ० रामशरण जोशी थे। डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ० ऋषभदेव शर्मा ने किया। कवयित्री सुश्री विनीता शर्मा के काव्य संकलन 'स्वांत: सुखाय' का लोकार्पण प्रो० दिलीप सिंह ने किया। प्रो० टी०वी० कट्टीमनी ने भवानी भाई को समर्पित प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। 'भवानी मिश्र : जीवन और प्रदेय' विषय पर डॉ० हीरालाल बाछोतिया ने अपने विचार रखे। 'भवानी मिश्र : विविध आयाम एवं मूल्यांकन' पर भी विचार किया गया। दूसरे दिन विष्णु प्रभाकर पर तीन सत्रों 'जीवन और प्रदेय', 'विविध आयाम' तथा 'मूल्यांकन' पर विचार किया गया।

हरियाणवी के विकास में सरकारी उपेक्षा

हरियाणवी भाषा और साहित्य के विकास में सबसे बड़ी बाधा है सरकारी उपेक्षा। कथित रूप से हरियाणवी भाषी हरियाणा में उर्दू, पंजाबी और संस्कृत भाषाओं की अकादमियाँ हैं और इन भाषाओं में पत्रिकाएँ भी निकलती हैं, लेकिन न हरियाणवी अकादमी है और न हरियाणवी में कोई पत्रिका निकलती है।

ये शब्द हैं हरियाणवी भाषा और साहित्य के अधिकारी विद्वान डॉ० रामनिवास 'मानव' के, जो उन्होंने केन्द्रीय साहित्य-अकादमी, दिल्ली द्वारा अपनी 'हरियाणवी' शीर्षक पुस्तक के प्रकाशन में उपरान्त कहे।

'मंटो जिन्दा है' का नाट्य प्रदर्शन

विगत दिनों मुम्बई में प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० नरेन्द्र मोहन द्वारा रचित मंटो की बहुचर्चित जीवनी 'मंटो जिन्दा है' का नाट्य प्रदर्शन विराट् कलोद्भव द्वारा वाई०डब्ल्यू०सी०ए० के थियेटर में किया गया। प्रसिद्ध निर्देशक श्री आर०एस० विंकल ने बड़ी सूझबूझ और कल्पनाशीलता से नए मंचीय मुहावरों के सहारे मंटो के जीवन के मार्मिक प्रसंगों को बड़े कौशल से प्रस्तुत किया।

कवयित्री सम्मेलन सम्पन्न

'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा कवयित्री सम्मेलन का आयोजन हिन्दी भवन में किया गया। मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्रीमती मृदुला सिन्हा थीं। अध्यक्षता सुप्रसिद्ध कवयित्री डॉ० पुष्पा राही ने की। स्वागताध्यक्ष श्रीमती सुनीता दीक्षित थीं। संचालन सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती इंदिरा मोहन ने किया।

हंसराज रहबर को याद किया

विगत दिनों दिल्ली में विचारक और आलोचक श्री हंसराज रहबर जन्मशती पर आयोजित एक समारोह में प्रख्यात आलोचक श्री विश्वनाथ त्रिपाठी ने अपने विचार रखे। समारोह में डॉ० मैनेजर पाण्डेय ने रहबर के लेखन के मूल्यांकन की जरूरत बताई। इस अवसर पर विद्वानों ने अपने विचार रखे। रहबर की पुत्रियों ने कविताओं के द्वारा अपने पिता को याद किया।

पुस्तक परिचय

मिथिलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ

मिथिलेश्वर

प्रथम संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 148

सजि. : रु० 250.00 ISBN : 978-81-7124-974-9
अजि. : रु० 120.00 ISBN : 978-81-7124-975-6

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मिथिलेश्वर की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का यह अत्यन्त महत्वपूर्ण संकलन है। कथ्य की विविधता तथा नवीनता, रोचक भाषा-शैली तथा विलक्षण किस्सागोई मिथिलेश्वर की खास विशेषता रही है। उनका रचना-संसार गाँव से शहर की ओर संक्रमणशील समाज की विसंगतियों और अन्तर्विरोधों का संसार है, जिस पर उनकी पकड़ गहरी है।

उनकी कहानियाँ बढ़ती हुई महँगाई, बेरोजगारी, शोषण, अन्याय, अन्धविश्वास और सर्वग्रासी भ्रष्टाचार के प्रति संवेदनशील युवा मन की तीखी प्रतिक्रियायें हैं, जिनके माध्यम से वह इन सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध एक प्रतिकूल वातावरण तैयार करने की चेतना जागृत करते हैं। इस तरह उनकी कहानियाँ कथा-सूत्रों एवं चरित्रों के माध्यम से सभ्यता की समीक्षा भी हैं।

मिथिलेश्वर अपनी कहानियों में मानवीय संवेदना एवं ग्रामीण यथार्थ को बदलते समय और समाज के सन्दर्भ में वस्तुगत ढंग से व्यक्त करते हैं। उनकी अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण जीवन पर आधारित हैं। कुछ कहानियों में नगरीय जीवन-मूल्यों की झलक भी मिलती है। उनकी कहानियों में अनियन्त्रित, अमर्यादित नगरीय संस्कृति और उसके प्रभाव का चित्रण तो हुआ ही है, शहर की वर्गीय चेतना को प्रामाणिक ढंग से व्यक्त करने का सामर्थ्य भी दिखायी देता है। अन्धविश्वास, बद्धमूल धारणाएँ, मानसिक पिछड़ापन, बदलते सामाजिक-आर्थिक सम्बन्ध, पारिवारिक ढाँचे में बदलाव, धर्म, संस्कृति एवं अर्थसत्ता का अन्तर्सम्बन्ध, असहिष्णुता, संवेदनहीनता और संकीर्णता में अनपेक्षित वृद्धि, सत्ता की संस्कृति एवं युद्धोत्तर परिणाम जैसे अनेक विषय इन कहानियों की संरचनाओं में समाहित हुए हैं। इन कहानियों को पढ़ते हुए कुछ समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ भी स्पष्ट होती हैं। असहाय एवं उपेक्षित लोगों के प्रति संवेदनशील दृष्टि और उनके अस्तित्व को स्थापित करने का प्रयास इन कहानियों को सार्थक एवं सफल बनाते हैं। इनमें जीवन का राग है, खुरदुरी जमीन पर नंगे पाँव चलने का अहसास है।

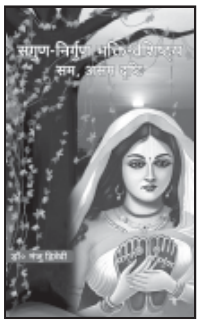

सगुण-निर्गुण भक्ति-वैशिष्ट्य सम, असम दृष्टि

डॉ० मंजु द्विवेदी

प्रथम संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 112

सजि. : रु० 150.00 ISBN : 978-81-7124-973-2

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रस्तुत संग्रह की बात! आज के युग में वैदिक परम्पराओं और ऋचाओं के प्रति आमजन में कोई दिलचस्पी नहीं है। पाश्चात्य संस्कृति हावी होती जा रही है। विज्ञापनों के चंगुल में फँसी नई पीढ़ी काफी हद तक प्रैक्टिकल और इंटेलीजेंट है। परन्तु अपने वैदिक इतिहासों की पृष्ठभूमि से परिचित नहीं है। अत: हमें उन्हें अपने साहित्येतिहासों से अवगत कराना होगा। हिन्दी साहित्य के इतिहास में कविता, कहानी, नाटक, निबन्ध, आलोचना, समीक्षा का हर काल में अपना सर्वोपरि स्थान रहा है। इसी लक्ष्य के तहत लेखिका ने कोशिश की है कि सगुण साकार ब्रह्म और निर्गुण निराकार ब्रह्म के बिखरे-छुपे मोतियों को एकत्रित करके साहित्य में एक अद्‌भुत चमत्कार पैदा किया जा सके। अतएव सगुण एवं निर्गुण ब्रह्म के सम-असम मोतियों को एक में गूँथकर माला का रूप देने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक में विशेष रूप से निम्न बिन्दुओं पर विमर्श हुआ है। यथा—भक्ति का स्वरूप क्या है? उसका प्रादुर्भाव कैसे हुआ? सगुण-निर्गुण ब्रह्म का औचित्य क्या है? और दोनों के सम्प्रदाय तथा उपासक कौन हैं? तथा उनकी साधना-पद्धति, मूर्तिपूजा, कर्मकाण्ड जाति-पाँति का खण्डन-मण्डन, गुरु-महिमा, नाम-महिमा, चित्तशुद्धि में सगुण भक्त एवं निर्गुण सन्त एक-दूसरे से कहाँ तक समानता रखते हैं। तथा दोनों के विचार-भाव एक गुलदस्ते में विभिन्न प्रकार के फूलों के समान हैं। इस पुस्तक में भक्ति के काल-खण्डों की विवेचना एवं दोनों पक्षों (सगुण-निर्गुण) के विभिन्न स्वरूपों का मौलिक चिन्तन एवं विश्लेषण समय सापेक्ष है, जो सहज, सरल, सुबोध शैली में सम-सामाजिक तुलनात्मक अध्ययन का एक दस्तावेज है।

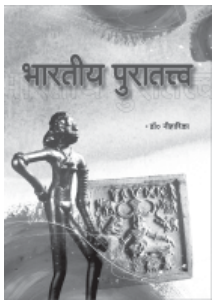

भारतीय पुरातत्त्व

नीहारिका
अजय श्रीवास्तव

प्रथम संस्करण : 2013 ई०

डबल क्राउन अठपेजी

पृष्ठ : 428

सजि.: रु० 1000.00 ISBN : 978-81-7124-819-3
अजि. : रु० 500.00 ISBN : 978-81-7124-968-8

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भारत का अतीत अत्यन्त गौरवशाली रहा है। यह अतीत उसे विश्व परिदृश्य पर सर्वोच्च स्थान पर आसीन करता है। इस अतीत के अध्ययन के लिए पुरातत्त्व एक बेहद महत्त्वपूर्ण व अनिवार्य उपादान है। आदि मानव की विकसित मानव के रूप में विकास-यात्रा की कथा पुरातत्त्व द्वारा ही उद्‌वाचित हो सकती है। इस सुदीर्घ काल-मान में उसके आवास, भोजन, रीति-रिवाज, आमोद-प्रमोद, कृषि, पशुपालन, उद्योग-धन्धे, कला, उपकरण व औजार, अन्तिम संस्कार आदि जीवन के विविध आयामों पर प्रकाश डालने का कार्य भी पुरातत्त्व द्वारा ही किया जाता है। इस प्रकार मानव के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक आदि विविध पक्षों के साथ ही तत्कालीन पर्यावरण, प्रकृति की स्थिति और उनका मानव-जीवन में योगदान व उपादेयता की जानकारी भी पुरातत्त्व द्वारा होती है।

पुरातत्त्व द्वारा मानव-अतीत के उद्‌घाटन की यात्रा में सर्वेक्षण, उत्खनन, संरक्षण, परिरक्षण, प्रदर्शन, इतिहास की व्याख्या व प्रस्तुति आदि विविध आयाम होते हैं जिनका प्रस्तुत पुस्तक 'भारतीय पुरातत्त्व' में विस्तृत वर्णन किया गया है। पुरातत्त्व क्या है, यह बताते हुए उसके विविध क्षेत्र, मानविकी और प्राकृतिक विज्ञान से उसके सम्बन्ध पर भी प्रकाश डाला गया है। विश्व में पुरातत्त्व का इतिहास व विकास सम्बन्धी विवरण अत्यन्त रोचक होने के साथ ही ज्ञानवर्द्धक भी है। भारत में पुरातत्त्व का इतिहास व विकास वर्णन, पुरातात्विक छायांकन, विभिन्न प्रकार के पुरावशेषों के उत्खनन की भिन्न-भिन्न विधियाँ, स्तर विन्यास की पहचान व महत्त्व, पुरावशेषों तथा पुरावस्तुओं को संरक्षित व परिरक्षित करने के वैज्ञानिक तरीके और इनकी तिथि निर्धारित करने के लिए प्रयुक्त विभिन्न विधियों का अत्यन्त संयोजित व परिष्कृत वर्णन किया गया है। पारिस्थितिकी व प्रातिनूतन काल से आदि मानव का उद्‌भव व विकास, विश्व में पुरापाषाण काल से होते हुए भारत में पाषाण काल की यात्रा अत्यन्त रोचक व तर्क पूर्ण है। भारत में खाद्य

उत्पादन और प्राक् तथा पुरा इतिहास के विषय में नवीन विचारों और मतों के साथ ही हड़प्पा, ताम्र-पाषाण, ताम्र-निधि, लौह, वृहत्पाषाण स्मारक संस्कृतियों का वर्णन भी निष्पक्ष रूप से तार्किक और नवीनतम तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया गया है। विभिन्न प्रकार के मृदभाण्डों का उल्लेख इस पुस्तक को अत्यन्त समृद्ध बनाता है। प्रमुख उत्खनित स्थलों में काफी पहले से प्राप्त व उद्घाटित स्थलों के साथ ही हाल में उत्खनित खैराडीह, लहुरादेव, नरहन, अकथा, रामनगर, अगियाबीर आदि का वर्णन पुस्तक को नवीनतम जानकारियों से पूरित करता है। हिन्दी भाषा में पुरातत्त्व सम्बन्धी पुस्तकों के अभाव को यह पुस्तक सशक्त रूप में पूरा करती है। पुस्तक में वे सभी रेखाचित्र, छायाचित्र, मानचित्र दिये गये हैं जो इसके वर्ण्य-विषय को स्पष्ट करते हैं, पुष्ट करते हैं और प्रामाणित करते हैं।

कबीर वाणी पीयूष

डॉ० ठाकुर जयदेव सिंह
डॉ० वासुदेव सिंह

एकादश संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 272

अजि. : रु० 60.00 **ISBN : 978-81-7124-979-4**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

कबीर वाणी पीयूष कबीर की प्रतिनिधि रचनाओं का संकलन है। कबीर का प्रमुख साहित्य तीन खण्डों में विभक्त है—रमैनी, साखी और शब्द या पद। अद्यावधि विश्वविद्यालयों में साखी और पदों का ही अध्ययन-अध्यापन होता रहा है, जिसका परिणाम यह हुआ है कि हिन्दी के पाठक कबीर वाणी के प्रमुख अंग—रमैनी से प्राय: अपरिचित ही रहे हैं। अतएव एक ऐसे संग्रह की नितान्त आवश्यकता थी जिसमें कबीर-वाणी का सारतत्व समाविष्ट हो, जिसके द्वारा कबीर के साधक और कवि रूप को भली-भाँति समझा जा सके। प्रस्तुत संकलन इसी लक्ष्य की पूर्ति का प्रयास है। इसमें साधक-चित्त की गहन अनुभूति से निसृत अमर वाणी के तीनों रूपों—साखी, रमैनी और पदों—के चुने हुए ऐसे अंशों को संकलित किया गया है, जिससे कबीर के सिद्धान्त, साधना एवं काव्य-वैशिष्ट्य को सुगमता से परखा जा सके।

'मसि कागद' का स्पर्श न करनेवाले और भ्रमणशील-व्यक्तित्व-सम्पन्न कबीर की वाणी का न केवल प्रचार-प्रसार उनके शिष्यों-प्रशिष्यों एवं अनुयायियों द्वारा सुदूरवर्ती क्षेत्रों में किया गया, अपितु उसमें न जाने कितना अंश भक्तों द्वारा जोड़ा गया। परिणामस्वरूप कबीर की रचनाओं की कलेवर-वृद्धि के साथ उसमें भाषा-भेद और पाठ-भेद भी बढ़ता गया। कबीर के नाम से उपलब्ध इस विपुल साहित्य का अत्यन्त श्रमपूर्वक एवं वैज्ञानिक पाठ निर्धारित करने का प्रयास किया गया है तथा कबीर के मूल वचनों तक पहुँचने की चेष्टा की गई है।

सामान्यत: कबीर को समझना दुष्कर है, पाठ अशुद्ध होने से अर्थ करने में भ्रान्तियाँ अधिक बढ़ती हैं। अतएव प्रस्तुत संकलन में वैज्ञानिक पाठ निर्धारण के अतिरिक्त, विस्तृत भावार्थ बोधिनी व्याख्या भी दे दी गई है। रचनाओं की व्याख्या के अतिरिक्त, संबद्ध अंशों में प्रयुक्त प्रतीकात्मक एवं पारिभाषिक शब्दों की विस्तृत टिप्पणी एवं उनके काव्य-सौन्दर्य को भी इस प्रकार स्पष्ट कर दिया गया है जिससे पाठक उनकी वाणी का सुगमता से रसास्वादन कर सकें। इसके अतिरिक्त भूमिका में कबीर के व्यक्तित्व, उनके प्रामाणिक साहित्य, दार्शनिक विचारों तथा कवि रूप की भी समीक्षा दे दी गई है।

बना रहे बनारस

विश्वनाथ मुखर्जी

चतुर्थ संस्करण :2013 ई०

पृष्ठ : 124

अजि. : रु० 60.00 **ISBN : 978-81-7124-978-7**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

स्वर्गीय विश्वनाथ मुखर्जी की कृति 'बना रहे बनारस' का चतुर्थ संस्करण प्रकाशित करने में हमें हर्ष हो रहा है और गर्व भी। यह इस बात का प्रतीक है कि पाठकों ने इस कृति को कितना सराहा है, पसन्द किया है या यह कितनी लोकप्रिय हुई है। इस बात का प्रतीक भी है कि लोग बनारस के बारे में बहुत कुछ जानना चाहते हैं। पाठकों की जिज्ञासा को परवान चढ़ाया है लेखक की रोचक शैली ने। बनारस के बारे में जानने के लिए इतना कुछ है कि इस पर सैकड़ों पुस्तकें लिखी गई हैं और लिखी जा रही हैं। हमने भी इस दिशा में कई सार्थक प्रयास किए हैं। बनारस को जितने कोणों से देखिए, एक नई तस्वीर उभरती है। लेखक ने कई रोचक पहलुओं को इस पुस्तक में समेटा है। बनारस अपने घाटों के बारे में विश्व में विख्यात तो है ही, यहाँ की गायिकाओं ने भी संगीत और नृत्य कला में देश की इस सांस्कृतिक राजधानी का परचम लहराया है। हम इस प्राचीनतम नगर की इन दोनों विशेषताओं को इस नये संस्करण में समाहित कर रहे हैं।

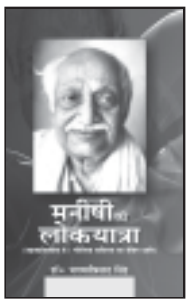

मनीषी की लोकयात्रा

(महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन दर्शन)

डॉ० भगवती प्रसाद

एकादश संस्करण : 2013 ई.

पृष्ठ : 488 + 24 पृष्ठ चित्र आर्ट पेपर पर

सजि. : रु० 600.00 **ISBN : 978-81-7124-976-3**

अजि. : रु० 300.00 **ISBN : 978-81-7124-977-0**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथ कविराज वर्तमान युग के विश्वविख्यात भारतीय प्राच्यविद् तथा मनीषी रहे हैं। इनकी ज्ञान-साधना का क्रम वर्तमान शताब्दी के प्रथम दशक से आरम्भ हुआ और प्रयाण-काल (1975 ई०) तक वह अबाधरूप से चलता रहा। इस दीर्घकाल में उन्होंने पौरस्त्य तथा पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान की विशिष्ट चिन्तन-पद्धतियों का गहन अनुशीलन कर साहित्य, दर्शन और इतिहास के क्षेत्र में जो अंशदान किया है उससे मानव-संस्कृति तथा साधना की अंतर्धाराओं पर नवीन प्रकाश पड़ा है, नयी दृष्टि मिली है।

उन्नीसवीं शती के धार्मिक पुनर्जागरण और बीसवीं शती के स्वातन्त्र्य-आन्दोलन से अनुप्राणित उनकी जीवन-गाथा में युगचेतना साकार हो उठी है। प्राचीनता के सम्पोषक एवं नवीनता के पुरस्कर्ता के रूप में कविराज महोदय का विराट् व्यक्तित्व संधिकाल की उन सम्पूर्ण विशेषताओं से समन्वित है, जिनसे जातीय-जीवन प्रगति-पथ पर अग्रसर होने का सम्बल प्राप्त करता रहा है।

ऐसे मनीषी की जीवनकथा, साहित्य-साधना, सत्संग, पत्राचार, तत्त्वविचार, स्वात्म-संवेदन तथा लोक-परलोक-सम्बन्धी विभिन्न विषयों में रुचि और गति का अनुशीलन करते हुए इस कृति में पाठक आत्मदर्शी महात्माओं के साक्षात् सम्पर्क का आनन्दानुभव करेंगे।

इस ग्रन्थ के मूल कलेवर में कविराजजी से प्रत्यक्ष सम्पर्क द्वारा प्राप्त जो सामग्री प्रस्तुत की गयी है, उसमें उनकी जीवनी, साहित्य-रचना, सत्संग, पत्राचार तथा अध्यात्म साधना-सम्बन्धी विविध तत्वों का विवेचन है। परिशिष्ट भाग में एकत्रित सामग्री उनके निजी संग्रह से उपलब्ध हुई है। इसके अन्तर्गत परलोक वार्ता तथा पारिभाषिक शब्दों की कविराजजी द्वारा की गयी व्याख्या विशेष महत्त्वपूर्ण है।

कविराजजी भारत के मनीषियों की उस लम्बी और उदात्त परम्परा की एक जीवंत कड़ी हैं जिनके ज्ञानालोक से मानव निरन्तर प्रकाशपथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा प्राप्त करता रहा है।

महापुरुषों की लोकयात्रा लोकशिक्षा के लिए होती है। कविराजजी तपोबल-विशिष्ट मनीषी थे। इनका जीवनघट लौकिक आपदाओं की तीव्र ज्वाला में संतप्त होकर परिपक्व हुआ है। अपने सुदीर्घ साधनाकाल में द्वार पर आयी हुई लौकिक सुविधाओं को ठुकराकर असुविधा और कष्ट के कंटकाकीर्ण मार्ग का ये निरन्तर वरण करते चले हैं।

आशा है, कविराज जी की यह ज्ञानोज्जवल गाथा—स्वतन्त्रचेता साधकों, सारग्राही विद्वानों तथा श्रद्धालु भक्तों सभी के लिए समान रूप से अभिनन्दनीय होगी।

आधुनिक काव्यधारा

डॉ० विजयपाल सिंह

संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 148

अजि. : रु० 45.00 **ISBN : 978-81-89498-63-4**

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

हिन्दी की अनेक विधाओं का प्रचार और प्रसार जितना आधुनिक काल में हुआ है उतना न तो आदिकाल में हुआ और न भक्तिकाल में। रीतिकाल की स्थिति भी वही है। भारतेन्दु काल से लेकर द्विवेदी युग, छायावादी युग, प्रगतिवादी युग, प्रयोगवादी युग तथा आज नई कविता के युग में भी काव्य के कथ्य और शिल्प के सन्दर्भ में अनेक परिवर्तन हुए। समाज जैसे-जैसे बदलता गया कविता में भी वैसे वैसे ही परिवर्तन होते चले गये।

भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग, प्रगतिवादी युग, प्रयोगवादी युग तथा नई कविता में अनेक गण्यमान कवि हुए। इन सैकड़ों कवियों का आधुनिक काव्य धारा में महत्त्वपूर्ण योगदान है। आधुनिक काव्यधारा में भी अनेक लब्धप्रतिष्ठ कवि हुए। परन्तु इसमें कतिपय प्रमुख कवियों को ही समाविष्ट किया गया है। प्रस्तुत संकलन विशालकाय न हो इस दृष्टि से और जिन गण्यमान कवियों को हम इसमें स्थान नहीं दे सके हैं उनके महत्त्व से भी हम भली-भाँति परिचित हैं।

इस 'आधुनिक काव्यधारा' में मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह 'दिनकर', सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', गजानन माधव मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह तथा सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' को लिया गया है। उक्त कवियों की कविताएँ स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं में ही नहीं अपितु पी०सी०एस०, आई०ए०एस० के अतिरिक्त अनेक प्रतियोगी परीक्षाओं में भी निर्धारित की जाती हैं। छात्र-छात्राओं, प्रतियोगी परीक्षाओं के अभ्यर्थियों के अतिरिक्त हिन्दी काव्य में रुचि रखने वाले जिज्ञासुओं को भी आधुनिककालीन प्रमुख कवियों की एक झलक मिल सकेगी।

विद्वत्वर्ग तथा जनसाधारण वर्ग को दृष्टि में रखते हुए आधुकिकालीन कवियों को समझने के लिए एक उपयोगी और महत्त्वपूर्ण भूमिका भी दी गई है। भूमिका में आधुनिककालीन प्रत्येक युग की सामान्य प्रवृत्तियों और समाज की चित्तवृत्तियों का विशेष रूप से चित्रण किया गया है। इस प्रकार इस आधुनिक काव्यधारा को उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण बनाने का भरसक प्रयत्न किया गया है।

प्रज्ञान तथा क्रम पथ

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज

द्वितीय संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 128

अजि. : रु० 90.00 **ISBN : 978-81-7124-971-8**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

महामनीषी महामहोपाध्याय डॉ० गोपानीथ कविराज जी के इत:स्तत: बिखरे प्रबन्धों का जो समसामयिक पत्रिकाओं में बंगभाषा में छपे थे, भाषानुवाद 'प्रज्ञान तथा क्रमपथ' की संज्ञा से अभिहित होकर अपना आत्मप्रकाश कर रहा है। प्रातिभ ज्ञान के परम चरम शिखर पर आरूढ़ होकर उन महामनीषी ने अध्यात्मतत्त्व के मूलभूत क्रमात्मक विज्ञान का जो विहंगावलोकन किया था, वही उनकी प्रोज्ज्वल समन्वयात्मक प्रज्ञा के स्पर्श से परिमार्जित होकर, विभिन्नता में भी एकता का प्रतिफलन कराता हुआ, पश्यन्ति भूमि से वैखरी तक के अवरोहण क्रम में उतरते हुए भी परमेश्वर के 'परमरस' की रसमयता को अक्षुण्ण रखता हुआ वाङ्मयी मूर्ति धारण कर हमारे समक्ष प्रकट हो रहा है।

'प्रज्ञान तथा क्रमपथ' ऐसा ही उपक्रम है, जहाँ 'कागज की लेखी' के लिये कोई स्थान ही नहीं है। जहाँ 'आँखिन की देखी' का लेखा-जोखा अंकित है। अन्तर्दृष्टि का उन्मीलन हो जाने पर सृष्टि के अन्तर्भूत तथा उससे परे के सबकुछ का, अज्ञात एवं 'गहन गंभीर' का भी साक्षात्कार हो जाता है। यही है वह प्रत्यक्ष ज्ञान जिसमें हृदय की संशय भरी कुटिल ग्रन्थि की परिणति हो जाती है जिज्ञासा भरी सरलता में और श्रद्धा-विश्वास का सम्बल मिल जाने से 'स्वान्तस्थ' ईश्वर के मन्दिर का द्वार स्वयमेव उन्मुक्त हो उठता है।

पृष्ठ 1 का शेष

''नहीं मालिक, मैंने नहीं पी। मुनियन झूठ बोल रहा है।''

''आप इस बूढ़े से पूछ लीजिये। यह इसका बाप है और मेरा चाचा है!''

मैंने बूढ़े की ओर देखा—''सच बताओ, तुम्हारे बेटे ने पी थी कि नहीं?'' बूढ़ा एक क्षण चुप रहकर बोला—''कल रात यह अपनी घरवाली के साथ झगड़ रहा था।''

''मैं झगड़े के बारे में नहीं पूछता। कल तुम्हारे बेटे ने ताड़ी पी थी कि नहीं?''

''नहीं, मालिक! नहीं पी थी।''

''तो इसे कसम खाने के लिए कहिये।'' मुनियन ने गुस्से में कहा।

सच्चाई और कसम...और कसम भी किस तरह ली जाये? अठारह साल के वकालत के अनुभव ने सत्य तथा कसम पर से मेरा भरोसा उठा दिया था।

सोचते-सोचते मेरी दृष्टि अपने फटे जूतों पर गयी। तुरन्त मैंने बूढ़े को पास बुलाया और कहा—''देखो, तुम लोगों का जीवन चमड़े पर ही निर्भर है। चमड़े के बिना तुम्हारा काम चल सकता है क्या?''

''नहीं मालिक! चमड़ा न हो, तो हम सब मर जायें।''

''अच्छा, तो तुम लोगों को रोजी देने वाला चमड़ा यहाँ है। उठाओ, इसे अपने हाथों पर!'' बूढ़े ने जूते उठा लिये। ''अब मैं जैसे कहूँ, वैसे ही बोलो।''

मेरे कहने के अनुसार वह बोलने लगा—''भगवान के सामने मैं कह रहा हूँ...मुझे रोजी देने वाले इस चमड़े की मैं कसम खाता हूँ...।''

तब मैंने पूछा—''रात तुम्हारे बेटे ने पी थी कि नहीं?''

''हाँ मालिक, उसने पी थी।'' बूढ़ा काँप रहा था।

अपराधी से भी जूते उठाकर यही करने को कहा। उसने भी जूते उठाकर कसूर कबूल कर लिया। अपराधी पर चार आने जुर्माना हुआ। उसने तुरन्त दे भी दिया।

उनके चले जाने के बाद मैं काफी देर तक अपलक दृष्टि से उन पुराने जूतों को देखता रहा। उस वर्णनातीत अनुभूति ने मेरे भीतर जूतों के प्रति एक अजीब आदर का भाव पैदा कर दिया था। जिन जूतों को हम हेय-नगण्य समझते हैं, वे ही क्या हजारों-लाखों का भरण-पोषण नहीं करते? उन कोटि-कोटि मनुष्यों के लिए ईश्वर, धर्म, दर्शन—सब ये जूते ही तो हैं! चमड़ा ही उनका नारायण है, चमड़ा ही उनकी अन्नपूर्णा है, चमड़ा ही उनकी लक्ष्मी है! जो भरण-पोषण करे, धारण करे, वही तो भगवान है! अत: उस दिन से जूतों को पैरों में पहनने से पहले, मैं उस महापालक शक्ति को, जो जूतों के साथ है, मन में प्रणाम कर लेता हूँ! ■

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

सत्संग सुमन : सम्पादक : रमेश दीक्षित, प्रकाशक : श्री रामना सेवाश्रम न्यास, मौनतीर्थ, गंगाघाट, उज्जैन-456006, प्रथम संस्करण, मूल्य : 150/- रु०

× × जन्म-जन्मान्तरों के अर्जित पुण्य से ही सत्संग के संयोग बनते हैं। संत श्री सुमनभाई के सत्संग में 'श्रीरामचरितमानस' की अभिनव-मीमांसा के साथ जिज्ञासु-जनों के विभिन्न प्रश्नों का समाधान है यह पुस्तक।

अक्षर-पर्व (मार्च 2013) 'मायाराम सुरजन स्मृति अंक' : सं० सर्वमित्रा सुरजन, देशबन्धु कार्यालय, 506 आई०एन०एस० बिल्डिंग, 9 रफी मार्ग, नयी दिल्ली-110001

समीक्षा (जनवरी-मार्च 2013) : सं० सत्यकाम, एच-2, यमुना, इग्नू, मैदान गढ़ी, नयी दिल्ली-110068

प्रविष्टि

तुलसी सम्मान-2013 हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

मध्य प्रदेश तुलसी साहित्य अकादमी द्वारा प्रतिष्ठित साहित्यकारों को तुलसी सम्मान-2013 से अलंकृत किए जाने हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं। इस वर्ष के तुलसी सम्मान हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधाओं की जनवरी 2007 से 31 मई, 2013 के मध्य प्रकाशित कृतियों को आधार मानकर प्रदान किए जाएँगे, जिसमें तेरह पुरस्कार हैं। सभी सम्मान साहित्यकारों द्वारा प्रविष्टि के साथ प्रेषित कृतियों पर तुलसी सम्मानों हेतु गठित चयन समिति की अनुशंसा के आधार पर 16 नवम्बर, 2013 को भोपाल में आयोजित गरिमामय समारोह में प्रदान किये जाएँगे। साहित्यकार अपना जीवन परिचय, रंगीन पासपोर्ट साइज के दो फोटो, वर्ष 2007 से 31 मई, 2013 के मध्य प्रकाशित कृतियों की दो प्रतियाँ स्मारिका में प्रकाशन हेतु सम्बन्धित विधा की दो उत्कृष्ट रचनाओं सहित 31 मई, 2013 तक अध्यक्ष, मध्य प्रदेश तुलसी साहित्य अकादमी, सुंदरम बँगला, 50 महाबली नगर, कोलार रोड, भोपाल पर भेज सकते हैं।

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

हिन्दी भाषा में अनुसंधान, लेखन, प्रकाशन व सम्पादन को प्रगति देने के उद्देश्य से गुगनराम एजूकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसाइटी द्वारा प्रारम्भ तीन साहित्य पुरस्कारों के लिए कहानी-संग्रह, काव्य-संग्रह, दोहा-संग्रह, शोध ग्रन्थ, बाल साहित्य, प्राकृतिक चिकित्सा, आयुर्वेद, योग, मुक्तक, रूबाई-संग्रह आदि जनवरी 2006 से दिसम्बर 2012 तक के मध्य प्रकाशित पुस्तकों की एक-एक प्रति, लेखक के दो चित्र, परिचय के साथ अपनी प्रविष्टियाँ 31 जुलाई, 2013 तक सोसाइटी के गुगनराम सोसाइटी भवन, 202 पुराना हाउसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 पर भेज सकते हैं।

7वाँ अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन कम्बोडिया में

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी और हिन्दी-संस्कृति को प्रतिष्ठित करने के लिए संस्था व साहित्यिक वेब पत्रिका 'सृजनगाथा डॉट कॉम' द्वारा किए जा रहे प्रयास से 14 से 24 जून, 2013 तक कम्बोडिया, वियतनाम, थाईलैंड में 10 दिवसीय 7वें अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। मुख्य आयोजन कम्बोडिया की राजधानी नामपेन्ह में किया जाएगा। सम्मेलन में चार सत्र रखे गए हैं। मुख्य संगोष्ठी का विषय 'भूमण्डलीकरण और हिन्दी' है। अन्तर्राष्ट्रीय रचना पाठ के सत्र में चुनिंदा कवि, गीतकार, लघुकथाकार अपनी रचनाओं का पाठ करेंगे। आयोजन में विविध विषयों पर प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन होगा।

इच्छुक रचनाकार सहभागिता के लिए—

श्री जयप्रकाश मानस, संयोजक माध्यमिक शिक्षा मंडल, आवासीय परिसर, पेंशनवाड़ा, रायपुर, छत्तीसगढ़-492001, ई-मेल-srijangatha@gmail.com से सम्पर्क करके अपना पंजीयन करा सकते हैं।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 14 **अप्रैल-मई 2013** **अंक : 4-5**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2012-14 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. Stock/RNP/vsi E/001/2012-2014

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi.: (0542) 2413741, 2413082 (Resi.) 2436498, 2311423 ● Fax: (0542) 2413082

E-mail : **vvp@vsnl.com** ▪ **sales@vvpbooks.com** ● Website : **www.vvpbooks.com**